RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2021
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

शिव आमंत्रण

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

वर्ष-10, अंक-09, हिन्दी (मासिक), सितंबर 2023, पृष्ठ 16, मूल्य- 12:50

गणेश चतुर्थी

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी हार्दिक शुभकामनाएं

मेरी बहू- मेरी बेटी

मधुर संबंधों का आधार स्नेह-प्यार

राजयोग के अभ्यास से घर-परिवार में आई सुख-शांति, आपसी संबंध हो गए मधुर

ऐसी माताएं जिन्होंने बहू को बेटी से बढ़कर दिया प्यार

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान। समाज में आज तेजी से रिश्तों का ताना-बना बिखर रहा है और नींव कमजोर हो रही है, वहीं दूसरी ओर कुछ ऐसी भी सास-बहू हैं जिन्होंने न केवल रिश्तों की नई परिभाषा लिखी है, बल्कि आपसी प्यार-स्नेह, सामंजस्य और मधुर संबंधों की बदौलत दूरियों को पाटते हुए इस रिश्तों को धरातल पर मां-बेटी के रिश्तों में बदल दिया है। यह सब संभव हो पाया है ब्रह्माकुमारीज में दिए जा रहे राजयोग मेडिटेशन के ज्ञान से। अब इनमें सास-बहू का रिश्ता न होकर मां-बेटी के रिश्ते से भी गहरा रिश्ता हो गया है। इस स्टोरी में हम हजारों सफल कहानियों में से कुछ ऐसी ही चुनिंदा सास-बहू की मधुर संबंधों की कहानियां प्रस्तुत कर रहे हैं। **एक रिपोर्ट....**

ब्रह्माकुमारीज़ में सास-बहू के रिश्तों की हजारों सफल कहानियां...

राधा शर्मा
कोटा, राजस्थान

राजयोग के ज्ञान से पारिवारिक रिश्ते हो जाते हैं मधुर

सास: राजस्थान के कोटा निवासी राधा शर्मा (65) बतातीं हैं कि 50 साल से ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ी हूं। यहां से मिले ज्ञान से मेरा जीवन आसान हो गया। खुद को भाग्यशाली समझती हूं कि ब्रह्माकुमारी दीदियों के साथ मुझे लंबे समय तक सेवा करने का सौभाग्य मिला। पति भी इस ईश्वरीय ज्ञान में चल रहे हैं। हम लोगों की दिनचर्या सुबह 3.30 बजे शुरु हो जाती है। राजयोग का अभ्यास वर्षों से दिनचर्या में शामिल रहा है। बहू के रुप में तृप्ति के आने से घर तो स्वर्ग के समान बन गया है। बहू जितना मानती है, सेवा करती है इतना तो बेटी भी नहीं कर सकती है। इस ज्ञान के बाद हमारे आपसी रिश्ते मधुर हो जाते हैं, क्योंकि एक-दूसरे की फीलिंग, स्वभाव-संस्कार को हम एडजस्ट करने चलना सीख जाते हैं।

सासू मां से हर पल प्रेरणा मिली

बहू: तृप्ति शर्मा (45) बतातीं हैं कि सासू मां ने मुझे राजयोग मेडिटेशन का ज्ञान दिया और उनके गुण, दैवी संस्कारों से प्रभावित होकर मैं भी इस ईश्वरीय ज्ञान से जुड़ गई। सासू मां से ही मैंने सेवाभाव का गुण सीखा। उनमें हमेशा समर्पण भाव, विश्व कल्याण का भाव देखा। इस ज्ञान की बदौलत जब भी कभी जीवन में कोई परिस्थिति आए तो ड्रामा का ज्ञान यूज कर लेते हैं। जितनी भी आत्माएं उस परिस्थिति में हैं तो ज्ञान का यूज करते हैं।

सीमा मेहरा
हिमाचल प्रदेश

बहू ने अध्यात्म का मार्ग अपनाया, परिवार में बिखेरीं खुशियां

बहू: हिमाचल प्रदेश के नगरोटा सूरिया की सीमा मेहरा (36) बतातीं हैं कि दो साल पहले ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आई। राजयोग कोर्स के बाद जीवन की तलाश पूरी हो गई। इसके साथ ही मेरी परीक्षा भी शुरु हो गई। परिजन मेरा सेंटर जाना पसंद नहीं करते थे। सबसे ज्यादा सास परेशान करती थीं। लेकिन एक दिन वह सेंटर गईं तो बोलीं- मुझे नहीं पता था आप इतना अच्छा ज्ञान सुनने जाते हो और बोलीं- बहू मुझे माफ करना। उसके बाद मेरा पूरा परिवार बाबा का बन गया। धीरे-धीरे आसपास के भी लोग, संबंधी सभी जुड़ गए। आज सभी परिवार सुख-शांति के साथ जीवन जी रहे हैं। मेरी सास, मां से भी बढ़कर ख्याल रखती हैं। प्यार करती हैं। यह सब संभव हो पाया ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान से।

सास बोलीं- ऐसी बहू हर जन्म में मिले

सास: व्यासो देवी (62) बतातीं हैं कि मेरी बहू की बदौलत आज पूरे परिवार का उद्धार हो गया। हम तो भटक रहे थे, सत्य ज्ञान मिल गया। हमें परमात्मा से मिला दिया। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि हर जन्म में ऐसी बहू मिले। बहू ने बेटी से बढ़कर फर्ज निभाया। मेरी बहू की बदौलत आज नाते-रिश्तेदार इस ईश्वरीय ज्ञान से जुड़े। उनके परिवारों में भी सुख-शांति, आनंद आ गया। आसपड़ोस के लोग भी जुड़ गए। राजयोग से सोच सकारात्मक बनती है।

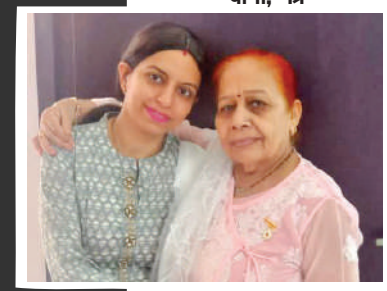

तारा मेंढेकर
सागर, मप्र

मेरी बहू, मेरा अभिमान है, बेटी की तरह प्यारी है

सास: मप्र के सागर निवासी तारा मेंढेकर (60) बतातीं हैं कि मैं 30 साल से राजयोग का अभ्यास कर रही हूं। इस ईश्वरीय ज्ञान को जीवन में धारण करने के बाद मेरे जीवन में बहुत परिवर्तन आए हैं। घर में सुख-शांति और प्रेम का माहौल हो गया। परमात्मा से जो ज्ञान मिला है तो ड्रामा की हर एक बात पर निश्चय है कि हर आत्मा का पार्ट अपना-अपना है। छोटे बेटे की बहू आई तो घर में प्रेम का माहौल देखकर चंद दिनों में ही सबसे घुल-मिल गई। मैंने उसे बेटी के समान प्यार और पालना दी। बहू ने भी अपने सेवा भाव से सभी का दिल जीत लिया। राजयोग से मुझे रिश्तों को मधुर बनाने का ज्ञान मिला। शिव बाबा का कमाल है कि ऐसी बहू मिली जो कुछ ही समय में परिवार को समझ गई।

एक-दूसरे का सम्मान करना जरूरी

बहू: राखी बताती हैं कि सासू मां की प्रेरणा से धीरे-धीरे सेवाकेंद्र पर कार्यक्रमों में जाना शुरु किया। घर में किसी तरह का बंधन नहीं था तो यह देखकर मैंने निर्णय लिया कि क्यों न मैं भी इस ज्ञान में चलूं। फिर पूरी नियम-मर्यादाओं के साथ सहयोगी बन गई। इस ज्ञान से मुझे सीख मिली कि पारिवारिक रिश्तों में आपसी मजबूती, स्नेह-प्यार के लिए जरुरी है एक-दूसरे का सम्मान करना। उनके गुणों को देखना। सहनशीलता और धैर्यता के साथ चलना।

माया पमनानी
बीना, मप्र

घर में बहू आए तो सभी को मिलकर सहयोग करना चाहिए

सास: मप्र के बीना निवासी माया पमनानी (58) बतातीं हैं कि ब्रह्माकुमारीज़ में मिले इस ज्ञान और योग को मैंने अपनी प्रेक्टिकल लाइफ में अप्लाई किया है। जीवन में कई उतार-चढ़ाव आए लेकिन सदा मन को स्टेबल रखा। ब्रह्ममुहूर्त में ही दिनचर्या की शुरुआत हो जाती है। जब बेटे की शादी हुई तो मैंने सभी की काउंसलिंग कि हमारे परिवार में एक नई आत्मा मतलब नए सदस्य का आगमन हो रहा है। हम सभी का फर्ज है कि उसका सपोर्ट करना। उसे घर के रीति-रिवाज आदि प्यार से समझाना। उसे प्यार देना ताकि वह सबके साथ घुल-मिल सके। यह समझ और ज्ञान मुझे ब्रह्माकुमारीज़ से ही मिला। मैंने बहू की शुरु से ही बेटी के समान माना और वैसे ही प्यार दिया।

सास के रूप में दूसरी मां मिल गईं

बहू: आराध्या पमनानी बतातीं हैं कि सास हमारी मां की तरह होती हैं। मैंने शादी के बाद एक मां को ही पाया है। मेरी सबसे अच्छी सास हैं। हमारी परवाह करती हैं। बिना कुछ कहे सब समझ जाती हैं। रिश्तों में प्यार-स्नेह के लिए जरुरी है कि हम एक-दूसरे को गहराई से समझें। छोटी-मोटी बातों को नजरअंदाज करें। गलतफहमी न पालें। परिवार के सदस्यों से कुछ सीखने का प्रयास करें। यदि हर बहू और सास इन बातों का ध्यान रखें तो घर-घर स्वर्ग बन जाएगा।

मेरे सपनो का भारत

युवा तू बन सर्व महान...

दैवी सनातन संस्कृति की पुनर्स्थापना के महान लक्ष्य में युवाओं की सेवा-साधना

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान। युवा तन-मन से शक्ति के वह पुंज होते हैं जिनके हौसले, साहस, मेहनत, त्याग-तपस्या का गुणगान स्वयं भगवान करते हैं। ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़कर आज सैकड़ों नहीं बल्कि लाखों ऐसे बालब्रह्मचारी, राजयोगी कुमार, तपस्वी जीवन जी रहे हैं। जिनकी रग-रग में परमात्म प्यार दौड़ता है। जिनके जीवन का मकसद मानव सेवा, विश्व कल्याण

और विश्व परिवर्तन है। जिन्होंने अपनी जवानी को ईश्वरीय सेवा में अर्पण कर आजीवन ब्रह्मचारी जीवन का संकल्प लिया है। ये वह युवा हैं जिन्होंने छोटी सी उम्र में तपस्या का मार्ग अपनाकर समाज के सामने एक नजीर पेश की है। आज की इस स्पेशल स्टोरी में हम आपसे परमात्मा के कुलदीपक ऐसे ही चुनिंदा युवाओं से रुबरु कराएंगे...

बचपन से था विश्व कल्याण का भाव, इसलिए ब्रह्मचर्य व्रत का लिया फैसला

बचपन से ही इच्छा थी कि समाज में कुछ कार्य करना है। साथ ही स्वामी विवेकानंद जी के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित थे। जब 15 अगस्त, 26 जनवरी पर स्कूल में कार्यक्रम होते और इनमें देशभक्त, महापुरुषों के किस्से-कहानियां सुनाए जाते तो प्रेरणा मिलती और मन में एक ही सवाल उठता था कि मुझे भी कुछ ऐसा करना है कि मरने के बाद भी लोग याद रखें। 22 साल की उम्र में ब्रह्माकुमारीज़ का ज्ञान मिला तो लगा कि मेरे मन में जो समाजसेवा, विश्व कल्याण का भाव है उसे पूरा करने के लिए इस ज्ञान से बढ़कर और कोई जरिया नहीं हो सकता है। इस पर मैंने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का फैसला लेते हुए राजयोगी जीवन की राह चुनी। क्योंकि इससे खुद का तो जीवन संवरता ही है, दूसरों का जीवन भी बनाने का मौका मिलता है। बिजनेस में काफी उतार-चढ़ाव आए लेकिन आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग की बदौलत कभी मन में चिंता या भय के विचार नहीं आए।

- बीके मनोज (44),
बीए, जैतवारा,
सतना, मप्र

संदेश : युवावस्था ही जीवन का वह दौर है जब हम उसे जो दिशा देना चाहें दे सकते हैं। समय रहते स्प्रीचुअल पावर, भगवान की शक्ति को समझें। मेरा युवाओं से आह्वान है कि लाइफ में एक बार जरुर ब्रह्माकुमारीज़ सेंटर जाकर इस ज्ञान को समझने की कोशिश करें।

चाचा से मिली प्रेरणा, विश्व सेवा के लिए समर्पित किया जीवन

मेरे परिवार में सब नॉनवेज खाते थे लेकिन मुझे अच्छा नहीं लगता था। इस दौरान मेरा चाचा ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ गए। चाचा के रोज-रोज सेवाकेंद्र जाने का घर वालों ने विरोध किया। मैं भी चाचा का मजाक उड़ाया करता था। एक दिन चाचा से कुछ जरूरी काम होने के चलते संयोग से मैं सेंटर पहुंच गया। वहां जाते ही बहुत ही गहरी शांति की अनुभूति हुई। दीदी ने प्यार से टोली खिलाई और दूसरे दिन आने को कहा। टोली के लालच में मैं दूसरे दिन फिर सेंटर पहुंच गया। दीदी का प्यार से बात करना, टोली खिलाना बहुत अच्छा लगा। तब मेरी उम्र 11 साल थी। गर्मी की छुट्टी में मैं सेंटर पर ही रहकर सेवा करता था। बड़े होने पर जब यह ज्ञान पूरी तरह समझ आ गया तो संयम के पथ पर चलते हुए अपना जीवन ईश्वरीय कार्य में अर्पण करने का फैसला किया। अब तो मन यही गीत गाता है पाना था सो पा लिया काम क्या बाकी रहा।

- बीके ओम प्रकाश (34), बीबीएस,
काठमांडू, नेपाल

संदेश : बचपन से ही मैंने राजयोग का अभ्यास किया और मुझे हमेशा परीक्षा में अच्छे नंबर आए। जो भी कार्य किया सभी में सफलता मिली। जरुरी नहीं है कि आप साधु-सन्यासी बन जाएं। जीवन का कोई भी क्षेत्र हो राजयोग को शामिल कर लेने से सफलता निश्चित हो जाती है।

बचपन से ही पवित्र जीवन जीने का संकल्प था, कॉलेज में सब कहते थे बाबा

बचपन से ही अंतर्मुखी स्वभाव था। परिवार का माहौल धार्मिक और आध्यात्मिकता से भरपूर था। परिवार में जब माता-पिता से साधु-संत, महात्माओं, गुरुओं की कहानियां सुनता था तो तभी संकल्प कर लिया था कि मुझे भी ऐसा ही बनना है। जीवन को कुछ अलग तरीके से जीना है। परमात्मा की तलाश में मैं बचपन में ही ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ गया था। इसके बाद मेरे माता-पिता और भाई-बहनें भी जुड़ते गए। दो बहनें समर्पित रूप से सेवाएं दे रही हैं। यहां सबसे अच्छी बात मुझे लगी कि सभी धर्म, संप्रदाय, जाति के लोगों का सम्मान होता है। शांति और भाईचारा पर जोर दिया जाता है। बचपन से जो मेरा सपना था कि मुझे ब्रह्मचर्य जीवन, पवित्र जीवन जीना है उसकी राह इस ज्ञान से मिली। कॉलेज में जब मैं सफेद कुर्ता-पजामा में जाता था तो सभी मुझे बाबा कहकर बुलाते थे। सभी साथी और शिक्षक बहुत सम्मान करते थे।

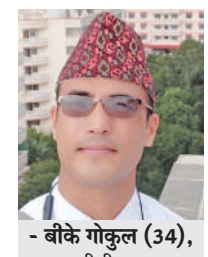

- बीके गोकुल (34),
बीबीएस,
वीरगंज, नेपाल

संदेश : परमात्मा शांति की दुनिया स्थापन करने आए हैं तो युवाओं को इसमें आगे बढ़कर सहयोगी बनना चाहिए। युवा ही दुनिया में बदलाव ला सकते हैं। परमात्मा की आशाएं भी युवाओं पर हैं। युवा अध्यात्म से जुड़े और स्वर्णिम दुनिया बनाने के भागीरथी कार्य में सहयोगी बनें।

मल्टी नेशनल कंपनी में एरिया मैनेजर की जॉब छोड़ सेवा का मार्ग चुना

मैं बचपन से ज्ञान में हूं। बचपन से ही भक्ति के संस्कार थे। लौकिक माताजी ज्ञान में चलती थीं। सेंटर पर कृष्ण जन्माष्टमी पर झांकी सजाई जाती थी तो मुझे श्रीकृष्ण बनाया जाता था। बचपन से एकान्त बड़ा अच्छा लगता था। पढ़ाई के बाद कुछ समय के लिए मल्टीनेशनल फार्मास्युटिकल कंपनी में एरिया मैनेजर की पोस्ट पर जॉब की। नौकरी के समय बाबा के गीत की एक लाइन याद आती थी 'दूर करें तुझसे ये दुनिया बाबा, ऐसे सुख ठुकराएंगे... ऐसा लगता था जीवन बाबा के लिए है। ये कहां कौड़ियों के पीछे अपना समय गवां रहा हूं। ऐसा महसूस होता था कि कुछ छूट रहा है, इसलिए नौकरी से रिजाइन देकर पूर्ण रूप से सेवा में लग गया। पवित्रता के प्रति मेरा शुरू से ही खिंचाव था। शादी के लिए बहुत दबाव बनाया लेकिन मेरी हिम्मत, शिव बाबा के प्रति प्यार को देखकर बाद में वह सब राजी हो गए कि तुम जैसा चाहो वैसा करो, लेकिन घर पर ही रहो।

- बीके सुमित (35),
बीएससी, कम्प्यूटर में
डिप्लोमा, हाथरस, उप्र

संदेश : दिल से एक ही बात निकलती है इस लायक मैं नहीं था बाबा, कितना प्यार तुमने दिया है। युवा साथियों से यही कहना चाहूंगा कि वक्त है कम लंबी मंजिल तुम्हें तेज कदम चलना होगा, हे परम तपस्या के पथिकों तुम्हें नूतन पथ रचना होगा।

समाज की सेवा के लिए कोचिंग क्लास बंद की, राजयोगी जीवन के हुए 28 साल

भक्तिभाव के संस्कार बचपन से ही घर में मिले। नेपानगर, बुरहानपुर में पिताजी की पोस्टिंग के दौरान एक दिन मैं ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा लगाई गई आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी देखने गया। वहां बताए गए आत्मा-परमात्मा का ज्ञान मेरे दिल को छू गया। उस वक्त मेरी उम्र 16 साल ही थी। फिर मैंने सात दिन का राजयोग मेडिटेशन का कोर्स किया। तो धीरे-धीरे जीवन से जुड़े सारे राज खुलते गए, सब सवालों के जवाब मिल गए। मुझ में आए बदलाव को देखकर माता-पिता और छोटा भाई भी जुड़ गया। पिताजी के सेवानिवृत्त होने पर परिवार पैतृक घर टिमरनी आ गया। यहां मैंने कॉमर्स कोचिंग क्लासेस शुरू की। कोचिंग बहुत अच्छी चल रही थी लेकिन अध्यात्म की ओर रुझान होने के चलते इस ओर पूरा समय नहीं दे पा रहा था। कोचिंग बंद करके पूरी तरह से हरदा सेवाकेंद्र पर समर्पित रूप से सेवाएं देने लगा। 28 साल से समर्पित रूप से सेवाएं दे रहा हूं।

- बीके राजेश (44),
एमकॉम, एसएससी,
हरदा, मप्र

संदेश : राजयोग से हमारे अंदर पॉजीटिव चैंज आता है। हमारी सोच बदल जाती है। जीवन में स्थायित्व आ जाता है। जीवन में संतोष का भाव आ जाता है। साथ ही हमारी भटकन बंद हो जाती है। जीवन का कोई भी क्षेत्र हो, राजयोग से सफलता के द्वार खुल जाते हैं।

राजयोग से छूटा व्यसन, मन हुआ शांत, अब ईश्वरीय सेवा ही जीवन का लक्ष्य

भोपाल में रक्षाबंधन पर दीदी से राखी बंधवाने गया तो उनके यहां ज्ञानामृत पत्रिका में लोगों के राजयोग से जुड़े अनुभव पढ़कर बहुत अच्छा लगा। दीदी पास के ही बीके अमर भाईजी के कृष्णानगर सेवाकेंद्र लेकर गईं। जहां ललिता बहन जी ने एक घंटे में ही सभी सवालों का समाधान कर दिया। सागर आकर बड़े बाजार सेवाकेंद्र में मीरा माताजी ने सात दिन का राजयोग कोर्स कराया। 2010 से ईश्वरीय मार्ग पर चल रहा हूं। पहले जल्दी मन विचलित हो जाता था। अस्थिर रहता था। गुटखा खाता था लेकिन राजयोग के अभ्यास से व्यसन छूट गया और मन शांत रहता है। रोज ब्रह्ममुहूर्त में 4 बजे से दिनचर्या शुरू हो जाती है। भोजन शुद्ध हो गया है। पहले होटल में भोजन करने, चाट-समोसा आदि में बहुत पैसा खर्च कर देता था लेकिन इस ज्ञान के बाद यह सब बंद हो गया तो घर वाले भी खुश हो गए। जीवन परमात्मा के कार्य में तन-मन से समर्पित कर दिया है।

- बीके सुनील (33),
सागर, मप्र

संदेश : मेडिटेशन से हमारा मन रिलेक्स हो जाता है। शांत हो जाता है। जीवन व्यवस्थित हो जाता है। कर्मों की गहनगति का ज्ञान होने से हमारे कर्म श्रेष्ठ कर्म हो जाते हैं। हम व्यर्थ के कार्यों, प्रपंचों आदि से बच जाते हैं। जीवन खुशनुमा होने से लोगों को भी आपसमान बनने की प्रेरणा मिलती है।

मुख्यालय शांतिवनः हिंदू, मुस्लिम और सिख युवा की प्रेरणादायक कहानी

वसुधैव कुटुम्बकम् का जीवंत उदाहरण

तीन संस्कृति, तीन धर्म और एकता के 13 बरस

स्पेशल स्टोरी

वसुधैव कुटुम्बकम्। इस महावाक्य को ब्रह्माकुमारीज़ में तन-मन से समर्पित तीन युवाओं ने साकार कर दिखाया है। तीन अलग-अलग राज्यों, तीन धर्म के होने के बाद भी इन्होंने एक साथ, एक ही कमरे में जिंदगी के अनमोल 13 बरस गुजारे और आज भी साथ-साथ हैं। वह भी आपसी प्यार-स्नेह और भाईचारे के साथ। यह संभव हो सका संस्थान में दिए जा रहे राजयोग के ज्ञान से। राजयोग न केवल व्यक्तित्व को सकारात्मकता से परिपूर्ण बना देता है बल्कि धर्म-मजहब की दीवारों को तोड़कर एकता के सूत्र में बांध देता है। पंजाब के जालंधर से दलजीत सिंह सिख धर्म से तो गुजरात के जामनगर से परसुमन सिंह हिंदू धर्म और मप्र के इंदौर से बुरहानउद्दीन अली मुस्लिम धर्म से हैं। आज इनका जीवन अपनेआप में किसी मिसाल से कम नहीं है। इन तीन युवाओं की कहानी लाखों लोगों के लिए प्रेरणास्रोत बनी हुई है।

एकसाथ ही हुई समर्पण की प्रक्रिया

सबसे गजब संयोग यह है कि तीनों युवा आज से 13 बरस पहले एक ही वर्ष में मुख्यालय शांतिवन में सेवा देने के लिए आए थे। यहां के ज्ञान, ध्यान और दिनचर्या में ऐसे रमे की यहीं के होकर रह गए। तीनों की ही एक साथ समर्पित होने की प्रक्रिया पूरी हुई।

कभी मनमुटाव और विवाद नहीं हुआ-

दलजीत सिंह जहां मीडिया में अपनी सेवाएं देते हैं तो बुरहानउद्दीन एजुकेशन विंग में और परसुमन सिंह फिल्म डिविजन में सेवाएं दे रहे हैं। 13 साल से एक ही रुम में एकसाथ होने के बाद भी इनका आपस में कभी मनमुटाव और विवाद नहीं हुआ। यदि रुम में एक साथी सो रहा हो और दूसरा लेट आया हो तो सामने वाले की सुविधा को देखते हुए वह बिना लाइट चालू किए ही अपना कार्य करता है। यदि एक को गर्मी लगे और दूसरे को ठंड तो आपसी स्नेह से एक कंबल ओढ़कर सो जाता है। तीनों ही मिलकर रुम में साफ-सफाई करते हैं। सगे भाई और दोस्तों की तरह प्रेम से रहते हैं।

बीमार होने पर रखते हैं ख्याल-

यदि तीनों में से कोई एक साथी बीमार हो जाता है या कोई शारीरिक समस्या आ जाती है तो दूसरे साथी उसके भोजन आदि का पूरा ख्याल रखते हैं। उसकी जरुरतों और सुविधाओं को पूरा करते हैं।

सेवाओं के विस्तार पर करते हैं चर्चा-

दलजीत सिंह, बुरहानउद्दीन अली और परसुमन सिंह ने बताया कि हम लोग रुम में आपस में सिर्फ सेवाओं को विस्तार देने के बारे में ही चिंतन-मंथन करते हैं। हमारे बीच कभी गपशप और व्यर्थ बातें नहीं होती हैं। हम तीनों का प्रयास रहता है कि एक-दूसरे को पूरा सहयोग करें। उनकी भावनाओं और पसंद-नापसंद का ध्यान रखें। यही हमारी एकता और भाईचारे का कारण है।

परसुमन सिंह (41)

कैमरामैन, वीडियो एडिटर, फिल्म डिविजन, शांतिवन मुख्यालय, आबू रोड

मेरे पिताजी एयरफोर्स में थे। गोरखपुर में पिताजी की पोस्टिंग के दौरान हमें ब्रह्माकुमारीज़ के बारे में पता चला। उस वक्त मेरी उम्र करीब चार साल थी। सबसे पहले माताजी ने राजयोग कोर्स किया। इसके बाद मैं और छोटी दो बहनें भी राजयोग का अभ्यास करने लगीं। आज दोनों बहनें मेरी तरह समर्पित रुप से सेवाएं दे रहीं हैं। इसके बाद पिताजी जब जामनगर गुजरात में पोस्टेड थे तब वह इस ईश्वरीय ज्ञान से जुड़ गए। इसके बाद घर में ही पाठशाला शुरु कर दी जो आज भी जारी है। देश और विश्व की सेवा के लिए मैंने अपना जीवन मुख्यालय में समर्पित करने का फैसला किया। पहले 15 दिन के हिसाब से यहां आया था। लेकिन यहां के माहौल, भाई-बहनों के अपनापन ने हमेशा के लिए अपना बना लिया। यहां सबसे अच्छी बात मुझे यह लगी कि मुख्यालय में एकसाथ बिना भेदभाव के हर धर्म, जाति, संप्रदाय के लोग रहते हैं।

दलजीत सिंह (37)

बीएससी, शांतिवन मुख्यालय, आबू रोड

बचपन से गुरुद्वारे और लंगर में बहुत सेवा की बचपन से ही आध्यात्म की ओर रुझान था। जवानी तक खूब गुरुद्वारे और लंगर में सेवा की। मैं हमेशा सोचता था कि यदि भगवान मिल जाएं तो यह जीवन उनके नाम कर दूंगा। कॉलेज के दौरान सहपाठी बीके संदीप भाई और बीके साबी भाई ने मुझे ब्रह्माकुमारीज़ के बारे में बताया। इसके बाद जालंधर सेवाकेंद्र पर राजयोग कोर्स किया तो मुझे पूरा विश्वास हो गया कि परमात्मा इस धरा पर आकर अपना कार्य कर रहे हैं। तभी मैंने निश्चय कर लिया कि अब जीवन ईश्वरीय सेवा में लगाना है। 13 साल से मीडिया डिपार्टमेंट में सेवा दे रहा हूं। हम रुम में तीनों भाई बहुत ही प्रेम, एकता और भाईचारे के साथ रह रहे हैं। न आपस में कभी किसी बात को लेकर मनमुटाव हुआ और न ही विवाद। एक-दूसरे की जरुरतों को हम समझते हैं। अनेकता में एकता लाना और विश्व बंधुत्व का भाव प्रैक्टिकल में यहां सिखाया जाता है।

बुरहानउद्दीन अली (35)

एनीमेटर, एजुकेशन विंग, शांतिवन मुख्यालय, आबू रोड

सबसे पहले हमारी माताजी (डॉ. जमीला बहन) संस्था के संपर्क में आईं। यह ज्ञान समझने के बाद उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आया। इसके बाद बड़ी बहन और छोटे भाई भी जुड़ गए। शुरुआत में संस्था में जाने पर मुझे हिचक होती थी लेकिन जब समझ आया कि यहां धर्म और जाति को लेकर किसी तरह को भेदभाव नहीं है तो मेरी आस्था बढ़ गई। इस ज्ञान से मैंने जाना कि परमात्मा से हमारा पिता-पुत्र का संबंध है। इस बात ने मुझे विशेष आकर्षित किया। जब मुख्यालय माउंट आबू आना हुआ तो यहां का पवित्र वातावरण देख कर बहुत प्रभावित हुआ। मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया कि अब सारा जीवन परमात्मा की सेवा में समर्पित करना है। भाईचारे, सौहार्द्र और एकता ही सबसे बड़ी शक्ति है। हम तीनों भाईयों ने इसे प्रैक्टिकल में कर दिखाया है। हमारे बीच कभी धर्म, ऊंच-नीच आदि को लेकर कोई मनमुटाव नहीं हुआ।

सेवाभाव की मिसालः मुरादाबाद की सीए भाषा ने विश्व सेवा के लिए जीवन किया अर्पण

कंपनी बंद कर ब्रह्माकुमारी बनीं भाषा, 12 लाख थी सालाना आय

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

प्रभु प्रेम का रंग ऐसा है जिसे एक बार लग गया तो उसे संसार के सारे सुख-वैभव और राजपाठ नगण्य प्रतीत होने लगते हैं। प्रभु से प्रीत, आध्यात्म से लगाव और विश्व सेवा के जुनून के चलते उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद की एक बेटी ने खुद की कंपनी बंद कर ईश्वरीय सेवा का मार्ग अपना लिया। कंपनी का टर्नओवर सालाना 12 लाख रुपये था। इसके बाद भी माया की जंजीरों को तोड़ने हुए अध्यात्म का मार्ग अपनाया।

ईश्वरीय सेवा में अपना जीवन समर्पित करने वाली 45 वर्षीय एचआर और फाइनेंस में एमबीए, ब्रह्माकुमारी सीए भाषा ने विशेष बातचीत में बताया कि सीए के दौरान 2007 में ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ी। 2011 में सीए कंम्पलीट होने के बाद मेरे एक पार्टनर के साथ मिलकर कंपनी की शुरुआत की। जिसका सालाना टर्नओवर 12 लाख रुपये था। जीवन बहुत ही खुश से बीत रहा था। लेकिन मन में एक टीस थी कि ये जीवन मुझे जिस कार्य के लिए मिला है वह मैं उतनी शिद्दत के साथ नहीं कर पा रही हूं।

ऑफिस की एक घटना से अचानक आया मोड़

ब्रह्माकुमारी सीए भाषा बतातीं हैं कि एक दिन ऑफिस में बैलेंस शीट बनाते हुए अचानक मन में ख्याल आया कि जीवन में भले मैं कितना भी पैसा कमा लूं लेकिन इससे क्या करेंगे। जीवन का उद्देश्य क्या है? ये जीवन क्या है? मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? आदि प्रश्नों को जानने आध्यात्म की गहराई में चली गई। लंबे समय तक साधना में रत रही। फिर गहन चिंतन-मनन किया और राजयोग का अभ्यास किया तो अंदर से आवाज आई कि मैं जिसके लिए इस सृष्टि पर आई हूं उससे अभी दूर हूं। परमपिता परमात्मा की हम बच्चों से जो आशाएं हैं उन्हें मैं पूरी नहीं कर पा रही हूं। इस राह में मैं भले खूब पैसा कमा लूं लेकिन विश्व कल्याण और लोगों को भला नहीं कर सकती हूं। मैंने निश्चय किया कि अब ताउम्र ब्रह्माकुमारी के रूप में विश्व कल्याण के लिए सेवा करनी है। मार्च 2018 में सारा कारोबार समेटकर मुख्यालय शांतिवन आ गई। तब से यहीं पर सेवाएं दे रही हूं। जीवन में जो पाना था वह पा लिया। मन में संतोष, खुशी और शांति का भाव है। मेरे जीवन का अनुभव है कि पैसा जीवन में शांति नहीं दे सकता है। यदि जीवन में परमानंद पाना है तो इसका एकमात्र रास्ता अध्यात्म ही है।

गणेश चतुर्थी का आध्यात्मिक महत्व

विघ्नहर्ता गणेशजी का जीवन सिखाता है जीवन के सूत्र

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। विघ्नहर्ता, गणपति गजानन, मंगलमूर्ति का जीवन हमें जीवन के महान सूत्र सिखाता है। दिव्यगुणों, विशेषताओं से संपन्न आपका बहुआयामी व्यक्तित्व हमें भी जीवन में सीखने, आगे बढ़ने और समस्याओं, परिस्थितियों को दूर करने की सीख देता है। जीवन को ज्ञान से भरपूर करके उसे श्रेष्ठ और महान बनाने की प्रेरणा देता है। इस वर्ष संकल्प करें कि श्रीगणेश जी के जीवन से कोई एक सीख लेकर उसे आत्मसात करेंगे और महान बनाएंगे।

गजानन गणपति महाराज के जीवन से इस बार कुछ नया सीखें और प्रैक्टिकल में अपनाएं

सूंड: सूंड आध्यात्मिक शक्ति की प्रतीक है। हाथी की सूंड इतनी मजबूत और शक्तिशाली होती है कि वह वृक्ष को भी उखाड़ कर, लपेटकर ऊपर उठा लेता है। साथ ही छोटे-छोटे बच्चों को भी प्रणाम करता है, किसी को पुष्प अर्पित करता है, पानी का लोटा चढ़ाकर पूजा करता है, सुई जैसी सूक्ष्म चीज को भी उठा लेता है। ज्ञानवान व्यक्ति भी अपने मूल आदतों को जड़ों से उखाड़कर फेंकने में समर्थ होता है। सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों को भी धारण करने के लिए, दूसरों को सम्मान, स्नेह और आदर देने में वह कुशल होता है। अपने पुराने संस्कारों को जड़ से पकड़कर निकाल फेंकने के लिए भी हाथी की सूंड जैसी उसमें आध्यात्मिक शक्ति होती है। इस तरह हाथी की सूंड ज्ञानी व्यक्तियों की क्षमताओं का प्रतीक है।

कर्ण: उनके कान पंखे जैसे बड़े-बड़े होते हैं। बड़े-बड़े खुले कान हमें यह शिक्षा देते हैं कि आवश्यक एवं महत्वपूर्ण बात चाहे वह स्व के प्रति हो या अन्य के प्रति ध्यान से सुनें। बड़े-बड़े कान, ज्ञान श्रवण के प्रतीक हैं। वे ध्यान से, जिज्ञासापूर्वक, ग्रहण करने की भावनाओं को भावना से, पूरा चित्त देकर सुनने के प्रतीक हैं। ज्ञान की साधना में श्रवण, मनन और निज अध्ययन यह तीन पुरुषार्थ बताए गए हैं। इनमें सबसे प्रथम श्रवण है। ज्ञान के सागर परमात्मा के विस्तृत ज्ञान का श्रवण इन बड़े कानों से समुचित करना ही इसका प्रतीक है।

आंखें: उनकी आंखें दिव्य दृष्टि वाली होती हैं, उनसे छोटी चीज भी बड़ी दिखाई देती है। उनकी छोटी आंखें दूरदर्शिता का प्रतीक होती हैं। हमारे जीवन में कई सूक्ष्म बातें, रहस्यपूर्ण बातें होती हैं जिन्हें दूरदर्शिता को ध्यान में रखते हुए, उनके परिणाम को देखते हुए, फिर अपनानी चाहिए। ज्ञानवान व्यक्ति का भी एक गुण होता है। वह छोटो में भी बढ़ाई देखता है। हर एक की महानता उसके सामने उभरकर आती है और सबको आदर देता।

महोदर: गणेशजी का बड़ा पेट समाने की शक्ति का प्रतीक है। ज्ञानवान व्यक्ति के सामने भी निंदा स्तुति, जय-पराजय ऊंच-नीच की परिस्थितियां आती हैं परंतु वह उनको स्वयं में समा लेता है। गणेशजी का लंबा पेट अथवा बड़ा पेट (महोदर) ज्ञानवान के इसी गुणों का प्रतीक है।

चार भुजाएं: गणेशजी की चार भुजाएं दिखाई जाती है उनमें से एक में कुल्हाड़ा दिखाया जाता है। ज्ञानवान व्यक्ति में ममता के बंधन काटने और संस्कारों को जड़ से उखाड़ने की क्षमता होती है उसी का प्रतीक यह कुल्हाड़ा है। ज्ञान एक कुल्हाड़ी की तरह से है जो उसके मन के जुड़े हुए दैहिक नातों को चूर चूर कर देता है। गीता में भी ज्ञान को तेज तलवार की उपमा दी गई है, जिससे कि काम रूपी शत्रु को मारने के लिए कहा गया है। आसुरी संस्कारों को मार मिटाने के लिए ज्ञानरूपी कुल्हाड़ा जिसके पास है वह आध्यात्मिक योद्धा ही ज्ञानी है। हमें अपना जीवन गणेश जी जैसा पूजनीय बनाना है तो ऐसी बड़ी शक्तियां धारण करनी होगी।

वरद् मुद्रा: गणपति जी का एक हाथ सदा वरद मुद्रा में दिखाया जाता है। देवता हमेशा देने वाले ही होते हैं। जिसकी जैसी भावना, श्रद्धा होती है उन्हें वैसी ही प्राप्ति अल्पकाल के लिए होती है। गणेशजी हमेशा दाता के रूप रहते हैं वैसे ही ज्ञानवान व्यक्ति की स्थिति ऐसी महान हो जाती है कि वह दूसरों को निर्भयता और शांति का वरदान देने की सामर्थ वाला हो जाता है। वह अपनी शुभ मनसा से दूसरों को आशीष प्रदान कर सकता है।

बंधन (रस्सी): आत्मा का परमात्मा के साथ नाता जोड़ना भी प्रेम के बंधन में बंधना है। गणपतिजी के एक हाथ में जो डोरे (बंधन) हैं वह इसी प्रेम के डोरे हैं। वे दिव्य नियमों के शुद्ध बंधन हैं। ज्ञानी स्वयं इन नियमों के बंधनों में स्वयं को ढालता है। इसका दूसरा भाव है कि आत्मा परमधाम से अकेली आती है जैसे ही वह देह में प्रवेश करती है तो कई संबंधों के बंधनों में बंध जाती है और उनके साथ उसका कर्मों का लेखा-जोखा शुरू हो जाता है। इन बंधनों से मुक्त होने के लिए ही आत्मा ईश्वर के पास आती है कि मुक्तिदाता मुझे मुक्त करो।

मोदक: मोदक शब्द खुशी प्रदान करने वाली वस्तु का वाचक है। ज्ञानवान व्यक्ति को भी अनेक कठिनाइयों, में से गुजरना पड़ता है अर्थात उसे तपस्या करनी पड़ती है। जीते जी मरना होता है और इसी से वह अधिकाधिक मिठास व ज्ञान का रस अपने आप में भरता है।

युवा प्रभाग

देशभर में 700 कार्यक्रम आयोजित

■ **हेल्थ वेलवीइंग एंड स्पोर्ट्स: एजेंडा फॉर यूथ कैंपेन देशभर में चलाया गया**

■ स्कूल-कॉलेज और शैक्षणिक संस्थानों में युवाओं को दिया स्वास्थ्य, तंदुरुस्ती और खेल का संदेश

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)।

भारत सरकार के युवा कल्याण एवं खेल मंत्रालय और ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के युवा प्रभाग की ओर से संयुक्त रूप से वाई-20 प्रोग्राम के तहत हेल्थ, वेलवीइंग एंड स्पोर्ट्सः एजेंडा फॉर यूथ कैंपेन देशभर में चलाया गया। इसके तहत प्रभाग की ओर से 700 से अधिक कार्यक्रम देशभर में आयोजित किए गए। युवा प्रभाग की उपाध्यक्ष ब्रह्माकुमारी चंद्रिका दीदी ने बताया कि स्कूल, कॉलेज, शैक्षणिक संगठन, क्लब आदि में आयोजित इन कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं को भारतीय पुरातन संस्कृति आध्यात्म, राजयोग मेडिटेशन, पॉजीटिव चैंज, पॉजीटिव थिंकिंग के साथ हेल्थ, वेलवीइंग और स्पोर्ट्स का संदेश दिया गया। कई प्रतियोगिताएं कराईं गईं और विजेताओं को सम्मानित किया गया।

शिव आमंत्रण, मंडी बामोरा (मप्र)। युवा प्रभाग की ओर से मंडी बामोरा के शासकीय हायर सेकंडरी स्कूल, मुंगावली सेवाकेंद्र और बीना के शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में सेमीनार आयोजित किया गया। इसमें सीधी से पधारीं युवा प्रभाग की जोनल को-ऑर्डिनेटर बीके रेखा दीदी ने बच्चों को मार्गदर्शन दिया और अपना आदर्श स्वामी विवेकानंद को बनाने की सीख दी। सेमीनार में खुरई से बीके किरण दीदी, राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त वरिष्ठ शिक्षक जगदीश त्रिपाठी, सरपंच दामोदर राय, युवा प्रभाग की क्षेत्रीय समन्वयक बीके जानकी दीदी, प्रतिनिधि नवीन पालीवाल, शिक्षक राजमणि दुबे ने भी अपने विचार व्यक्त किए। बीके रिया, बीके मधु भी मौजूद रहीं।

शिव आमंत्रण, जबलपुर (मप्र)। ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस पर सशक्त युवा-सशक्त भारत विषय पर शिव वरदान भवन सेवाकेंद्र पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान के चेयरमैन सीए कमल वलेचा, सचिव सीए चांदनी आहूजा, मप्र विद्युत मंडल अभियंता संघ के अध्यक्ष हितेश तिवारी, बैंकर विकास श्रीवास्तव, सिविल और वित्तीय मामलों की विशेषज्ञ एडवोकेट शालिनी चौधरी, योग विशेषज्ञ यश गुप्ता ने संबोधित किया। इस दौरान बीके पूजा दीदी, बीके विनीता दीदी, बीके आभा दीदी, बीके शान्ति दीदी, बीके शिवकुमारी दीदी, बीके हर्षित, बीके दीपक, बीके चेतन, बीके ममता, बीके विकास मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, पानीपत (हरियाणा)। ज्ञान मानसरोवर रिट्रीट सेंटर में अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस पर वाई-20 प्रोग्राम के तहत हेल्थ, वेलवीइंग एंड स्पोर्ट्सः एजेंडा फॉर यूथ कैंपेन 'स्वयं की आंतरिक शक्तियों की पहचान' विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें 800 से अधिक युवाओं ने भाग लिया। इसमें राजयोगिनी सरला दीदी, बीके भारत भूषण, बीके कविता दीदी व अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ किया। बीके सुमन बहन, प्रभारी मतलौडा एवं बीके ज्योति बहन, पानीपत ने भी अपने विचार व्यक्त किए। आर्यन ग्लोबल स्कूल से आए बच्चों ने डांस की सुंदर प्रस्तुति प्रस्तुत दी। स्कूल कॉलेज से आए प्रधानाचार्य एवं टीचर्स को ईश्वरीय सौगात दी गए।

शिव आमंत्रण, ग्वालियर (मप्र)। ब्रह्माकुमारीज प्रभु उपहार भवन माधौगंज में अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस पर वाई-20 के अंतर्गत आयोजित 'हेल्थ वेलवीइंग एंड स्पोर्ट्सः एजेंडा फॉर यूथ' थीम पर युवाओं के लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया। विधायक प्रवीण पाठक ने कहा कि युवा जीवन ही कुछ कर दिखाने का होता है। युवा प्रभाग 38 वर्ष से युवाओं के लिए कार्य कर रहा है यह गर्व की बात है। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके आदर्श दीदी ने कहा कि आज हमें अपना खानपान सुधारने की सबसे ज्यादा जरूरत है। बीके डॉ. गुरचरण सिंह ने कहा कि राजयोग को जीवन का हिस्सा बनाने से हम सबकुछ प्राप्त कर लेते हैं जो जीवन में पाना चाहते हैं। संचालन बीके सुरभि ने किया।

श्रीकृष्ण : ऐसा आदर्श व्यक्तित्व जो हम सभी का लक्ष्य हो...

16 कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारी

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। हम हर वर्ष श्रीकृष्ण जन्माष्टमी धूमधाम से मनाते हैं। लेकिन कभी सोचा है कि श्रीकृष्ण के जीवन में ऐसा क्या था जो उनके जीवन चरित्र का हम आज भी गुणगान करते हैं? आज भी उनके गुणों और विशेषताओं को याद किया जाता है। उनके कर्मों और जीवन से उदाहरण देकर मिसाल दी जाती है। श्रीकृष्ण ने जीवन के प्रत्येक पड़ाव पर अपने कर्मों से एक संपूर्णता का आदर्श प्रस्तुत किया है जो हर एक मनुष्य के लिए अनुकरणीय है।

श्रीकृष्ण के जीवन की 16 कलाएं जिनसे हम ले सकते हैं सीख...

शिक्षा (विद्या) देने की कला: विद्या ददाति विनयम अर्थात विद्या से विनय, विनय से पात्रता/योग्यता-योग्यता से धन-धन से धर्म एवं धर्म के पालन से सुख की प्राप्ति होती है। विद्या अपने आप में बड़ी कला होती है। जिसके पास विद्या होती है, उस व्यक्ति में कई गुण अपने आप आ जाते हैं। उसका प्रत्येक कर्म युक्तियुक्त और सद्कर्म बन जाता है। श्रीकृष्ण का पूरा जीवन ही शिक्षाप्रद रहा है। उन्होंने कोई भी शिक्षा देने से पहले उसे अपने कर्मों में लाए, उसके बाद ही उन्होंने शिक्षा दी। हम खुद को श्रीकृष्ण की तरह 16 कला संपन्न बनाकर अपने जीवन को श्रेष्ठ, आदर्श और देवतुल्य बना सकते हैं। इस राह को आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग मेडिटेशन सरल बना देता है।

लेखन कला: लेखन अपने आप में बहुत बड़ी कला है। इसे स्वयं के अनुभव, चिंतन और धर्म-ग्रंथों के अध्यापन से विकसित किया जा सकता है। कहते हैं साहित्य समाज का दर्पण होता है। अच्छा लेखक वही होता है जिसके चिंतन की धारा श्रेष्ठ, सकारात्मक और महान हो। अपनी दिनचर्या में लेखन कला को शामिल करें। जीवन की सफलता को इसमें लिखें। कलम की ताकत तलवार से भी ज्यादा बड़ी होती है। इतिहास में जितने भी महान पुरुष हुए हैं उनमें लेखन का विशेष गुण रहा है। श्रीकृष्ण भी अपने हर कर्म से दूसरों को सीख देते थे।

प्रशासन की कला: एक आदर्श और श्रेष्ठ राजा, नेता, प्रबंधक वही माना जाता है जो अपने अधीनस्थ प्रजा, जनता और कर्मचारियों के सुख-दुःख का ख्याल रखता है। वह उनके सुख- दुःख को अपना समझता है। श्रीकृष्ण के अंदर एक आदर्श प्रशासन और नेतृत्व की कला थी। उन्हें यह ज्ञान था कि कब और कहां क्या निर्णय लेना है। कैसे सभी को संतुष्ट करना है।

हास्य कला: जीवन में यदि हास्य-विनोद न हो तो वह नीरस हो जाता है। हास्य तो जीवन का श्रृंगार है। लेकिन हास्य भी मर्यादा के अंदर रहकर और समय देखकर किया जाए तो वह ही उचित माना जाता है। श्रीकृष्ण हास्य कला के एक आदर्शवान थे। वह बड़ी से बड़ी बात को भी विनोदी भाव में मर्यादा के साथ कह देते थे। अपनी वाणी से दूसरों को खुश करना देना यह भी एक पुण्य कार्य है।

स्वस्थ्य रहने की कला: आपने देखा होगा कि कभी भी देवताओं को बीमार या अस्वस्थ नहीं दिखाया गया है। सभी को स्वस्थ्य एवं निरोगी बताया गया है। श्रीकृष्ण का पूरा जीवन निरोगी रहा। खुद को सदा बीमारियों से मुक्त रखना, शरीर की देखभाल करना भी एक कला है। क्योंकि यदि हमारा शरीर स्वस्थ रहेगा तब ही हम कोई भी कार्य सही रीति से कर सकते हैं। इस कला से हम व्यर्थ के धन व्यय से भी बच सकते हैं। वर्तमान समय में व्यक्ति सबसे ज्यादा परेशान शारीरिक बीमारियों से है। ऐसे में खुद को सदा स्वस्थ्य बनाए रखना बहुत बड़ी कला और गुण है।

व्यवहार की कला: किसी भी व्यक्ति ने कितने भी धर्म-ग्रंथ, वेद-पुराण और साहित्य पढ़ रखे हों। चारों वेदों का ज्ञाता हो। या वर्तमान समय अनुसार पीएचडी कर रखी हो लेकिन यदि उसमें व्यावहारिकता नहीं है तो वह लोकप्रिय नहीं बन सकता है। न ही सभी का प्रिय बन सकता है। व्यावहारिकता का गुण अपने आप में बहुत बड़ा और महान गुण है। पारिवारिक व सामाजिक संबंधों में मुधरता बनाए रखने के लिए ये गुण होना बहुत जरूरी है। श्रीकृष्ण इस गुण की मिसाल थे। वह व्यावहारिकता में निपुण और पारंगत थे।

बातचीत की कला: ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय। औरन को शीतल करै, आपहु शीतल होय। गोस्वामी तुलसीदास के ये वचन आज भी प्रासंगिक हैं। वाणी में इतनी शक्ति होती है कि कड़वा बोलने वाले का शहद भी नहीं बिकता और मीठा बोलने वाले की मिर्ची भी बिक जाती है। वास्तव में मीठी वाणी बोलना न सिर्फ अपने, बल्कि दूसरों के कानों को भी सुकून देता है। इससे व्यक्ति के चरित्र का निर्माण बनता है। व्यक्ति के पास कितनी भी योग्यता हो लेकिन यदि उसकी वाणी में मधुरता, शीतलता और प्रेमपूर्ण नहीं तो उसे कोई पसंद नहीं

करता है। कहां, क्या और कितना बोलना यह जिसके जीवन में है वह हमेशा समान पाता है। श्रीकृष्ण वाक्य चातुर्य के आदर्श पुरुष हैं। उनके जीवन से हम इसे सीख सकते हैं कि कैसे बिगड़ते काम मीठी वाणी से साधे जा सकते हैं।

परिवर्तन की कला: परिवर्तन संसार का नियम है। आज जो है वह कल नहीं रहेगा और कल होगा वह आगे नहीं रहेगा। जैसे दिन के बाद रात आती है, वैसे ही सृष्टि का भी चक्र चलता है। सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग। इन चार युगों में सृष्टि चक्र समाहित है। वर्तमान समय पुरुषोत्तम संगमयुग चल रहा है। संगम अर्थात् दो स्थानों, दो युगों का मिलन। ये समय कलियुग के अंत और सतयुग के आदि का समय है। इसी समय परमात्मा इस धरा पर आकर हम आत्माओं को राजयोग की शिक्षा देकर फिर से पतित से पावन बनाते हैं। समय, परिस्थिति के अनुसार स्वयं को परिवर्तन कर लेना और वैसे ही ढाल लेना अपने आप में महान कार्य है। यही सफल जीवन का मंत्र भी है।

व्यर्थ को श्रेष्ठ बनाने की कला: दुनिया में जितने भी महान लोग हुए हैं सभी ने अपने जीवन के एक-एक पल को अपने लक्ष्य प्राप्ति में लगाया। हमारे जीवन का जो उद्देश्य है उसमें स्वयं को झोंक देना और व्यर्थ से बचकर एक-एक पल को श्रेष्ठ कार्य में लगाना एक महान कला है। श्रीकृष्ण के जीवन में हम देखते हैं कि उन्होंने कभी भी अपना समय व्यर्थ कार्यों, बातचीत में नहीं गंवाया। उन्होंने एक-एक पल को समर्थ बनाया। खुद को व्यर्थ विचारों, नकारात्मक विचारों, गलत आदतों से बचाकर रखना और समय को श्रेष्ठ कार्यों में सफल करना भी एक कला है।

दूसरों को अपना बनाने की कला: हम देखते हैं कि कई बार कोई व्यक्ति चंद मिनटों में ही अनजान व्यक्ति को अपना बना लेता है। उनके साथ घुल-मिल जाता है। जिसमें ये कला आ गई वह जो भी कार्य करेगा उसमें सफल रहेगा। क्योंकि आज पारिवारिक संबंधों में कटुता का कारण लोगों में इस कला का अभाव ही है। किसी के लिए दो मीठे बोल बोल देना, किसी की मदद कर देना, दुःखी को सहारा दे देना, जरूरतमंद की मदद कर देना और किसी के काम आ जाना ये वो बातें हैं जो किसी को भी अपना बना लेती हैं। श्रीकृष्ण इसमें चतुर और माहिर थे।

सीखने की कला: जीवन एक पाठशाला की तरह है, जितना सीखते जाओ उतना कम है। जिसके अंदर सीखने का गुण होता है वह व्यक्ति जीवन में सदा सफलता को प्राप्त करना है। फिर वह दूसरों के गुण हों, विशेषताएं या व्यावसायिक कौशल। पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम कहते थे कि यदि आप सूर्य की तरह चमकना चाहते हो तो पहले सूर्य की तरह जलना सीखो। जिस दिन सीखना बंद कर दिया समझो उसी दिन मृत्यु हो गई। सीखना तो जीवन की एक निरंतर प्रक्रिया है जो मृत्यु पर ही जाकर समाप्त होती है। श्रीकृष्ण ने हर बात पहले खुद की बाद में उन्होंने अपने कर्मों से दूसरों को शिक्षा दी।

नेतृत्व कला: नेतृत्व करना एक बहुत बड़ी कला है। इसे निरंतर प्रयास, लगन, अनुभव से विकसित किया जा सकता है। नेतृत्व चाहे परिवार का हो, समाज का, सत्ता का या किसी संगठन का। यदि आपके अंदर नेतृत्व के गुण नहीं तो आप सफल नहीं हो सकते हैं। नेतृत्वकर्ता में ईमानदारी, सभी के प्रति समदृष्टि, सर्व हितैषी, सहयोगी, कुशल वक्ता आदि गुण होना चाहिए। ये सभी गुणों से परिपूर्ण एक कुशल लीडर के रूप में श्रीकृष्ण के जीवन में सभी विशेषताएं थी जो एक लीडर में होना चाहिए।

आगे बढ़ने की कला: कई लोग होते हैं जो जीवन में थोड़ी सी सफलता पा लेने पर उसे ही अपना जीवन मान लेते हैं। जबकि जीवन तो एक नदी की धारा की तरह है जो तमाम अवरोधों और पड़ावों को पार करते हुए समुद्र में जाकर विलीन हो जाती है। इस तरह हमारे जीवन का भी एक लक्ष्य हो। साथ ही उस तक पहुंच के लिए खुद के अंदर आगे बढने की कला को विकसित करें कि किन बातों से हम आगे बढ़ सकते हैं। हर पल कुछ न कुछ नया सीखते रहें। कुछ रचनात्मक कार्य करते रहें।

समाने की कला: व्यर्थ विचारों, दूसरों की बुराई, घर और परिवार के राज आदि को अपने अंदर समाकर रखना भी एक कला है। यदि कोई हमारे सामने किसी की बुराई करता है या अवगुण बताता है तो उसे अपने अंदर समा लें। जैसे समुद्र अपने अंदर सभी नदियों का पानी समा लेता है वैसा ही हमारा हृदय हो। जिसके अंदर यह कला होती है उसे कभी भी नीचा नहीं देखना पड़ता है। श्रीकृष्ण भी सभी की बातों को सुनकर अपने अंदर समा लेते थे और एक की बात दूसरे को नहीं बताते थे।

पालना करने की कला: ईश्वर को पालनहार भी कहा जाता है। क्योंकि वह पूरी दुनिया की पालना करता है। इसी तरह हमारे अंदर भी परिवार, समाज और व्यवसाय के संबंध-संपर्क में आने वाले लोगों को पालना करने की कला हो तो सभी अपने हो जाते हैं। किसी के सुख-दुःख में शामिल हो जाना, दूसरों की सुविधा का ख्याल रखना और बड़प्पन का भाव रखना ऐसे गुण हैं जो बदले में ब्याज सहित हमें मिलते हैं। श्रीकृष्ण की पालना का ही कमाल है कि उनके राज में में एक भी व्यक्ति दुःखी, असंतुष्ट नहीं था। सभी उनसे खुश और सुखी थे। वह पूरे राज्य को परिवार की तरह पालना देते थे।

तनावमुक्त जीवन जीने की कला: जीवन है तो परेशानियां-समस्याएं आएंगी। सुख-दुःख जीवन के दो पहलू हैं। इन सबके बीच तनावमुक्त जीवन जीना भी एक कला है। आज सबसे तेजी से दुनिया में मानसिक समस्याएं बढ़ रही हैं। लोग तनाव में जीवन जीने के आदि होते जा रहे हैं। घर-घर में तनाव है। ऐसी स्थिति में खुद को तनावमुक्त रखते हुए जीवन का आनंद लेना भी एक महान कला है। श्रीकृष्ण ने जीवन में तमाम परेशानियों और समस्याओं के बीच खुद को सदा खुशी से संपन्न रखा। उनके चेहरे पर कभी भी निराशा और हताशा के भाव नहीं दिखे। हर परिस्थिति में वह मुस्कुराते रहे तो हम भी उनके जीवन चरित्र से संकल्प लें कि अपने जीवन में इसी तरह तनावमुक्त रहेंगे। श्रीकृष्ण के अंदर जो 16 कलाएं थी यदि उन्हें एक-एक व्यक्ति खुद में धारण कर ले तो वह दिन दूर नहीं जब इस सृष्टि पर नई दुनिया होगी और हर मानव देवतुल्य होगा।

संपादकीय

श्रीकृष्ण 16 कला संपूर्ण और संपूर्ण निर्विकारी थे

श्रीकृष्ण 16 कला सम्पूर्ण और संपूर्ण निर्विकारी थे। यह भी सत्य है कि जिन व्यक्तियों की जयंतियां मनाई जाती हैं वे 16 कला सम्पन्न नहीं थे। श्रीकृष्ण में शारीरिक आरोग्यता और सुंदरता थी, आत्मिक बल और पवित्रता थी तथा दिव्य गुणों की पराकाष्ठा थी। सतयुग से लेकर कलियुग के अंत तक मनुष्य चोले में जो सर्वोत्तम जन्म हो सकता है वह उनका था, अन्य कोई शारीरिक या आत्मिक दोनों दृष्टिकोणों से उतना सुंदर, आकर्षक, प्रभावशाली व्यक्ति नहीं हुआ और न ही हो सकता है। श्रीकृष्ण इतने महान कैसे बने? श्रीकृष्ण जन्म से ही इतने महान थे तो अवश्य ही उन्होंने पूर्व जन्म में कोई महान पुण्य किया होगा जिससे सर्वश्रेष्ठ देव पद तथा राज्य- भाग्य प्राप्त किया था। श्रीकृष्ण को योगीराज भी कहते हैं। उनके जीवन में किसी वस्तु भोग्य, आयुष्य आदि को कमी नहीं थी क्योंकि उन्होंने अपने पूर्व जन्म में योगाभ्यास किया होगा। श्रीकृष्ण के नाम के साथ तो श्री की उपाधि का प्रयोग करते हैं परंतु अपने जीवन में श्रेष्ठता लाने पर हमें विचार करना चाहिए। श्रीकृष्ण को मनमोहन अर्थात् मन को मोह लेने वाला कहा गया है क्योंकि उनका किसी व्यक्ति, वस्तु, वैभव में मोह नहीं था बल्कि सभी के मन को वे आकर्षित करने में सक्षम थे। कृष्ण शब्द का भी अर्थ है आकर्षित करने वाला, बुराइयों से छुड़ाने वाला अथवा आनंद स्वरूप। परमपिता परमात्मा निराकार शिव वर्तमान में नवयुग की स्थापना कर रहे हैं जिसमें श्रीकृष्ण पुनः इस सृष्टि पर महाराजकुमार के रूप में अवतरित होंगे।

बोध कथा/जीवन की सीख

अति वाचालता का दुष्परिणाम

एक राजा बहुत अधिक बोलता था। उसका मंत्री विद्वान् और शुभ चिंतक था। इसलिए सोचता रहता था कि राजा को कैसे इस दोष से मुक्त करुं और वह ज्ञान दूं जो कि मनुष्य के हृदय में बहुत गहराई से उतरकर उसके स्वभाव का अंग बन जाता है। मंत्री उचित अवसर की तलाश में था कि राजा को अपने इस दोष का आभास हो और उसके द्वारा होने वाली हानि को समझकर निकल जाए। एक दिन राजा मंत्री के साथ उद्यान में घूमते हुए एक शिला पर बैठ गया। शिला के ऊपर आम के पेड़ पर कौवे का एक घोंसला था। उसमें काली कोयल अपना अण्डा रख गई। कोयल अपना घोंसला नहीं बनाती, वरन कौवे के घोंसले में ही अंडा रख देती है। कौवी उस अंडे को अपना समझकर पालती रहती है। आगे चलकर उसमें से कोयल का बच्चा निकला। कौवी उसे अपना पुत्र समझकर पालती थी। कोयल के बच्चे ने असमय जबकि उसके पर भी नहीं निकले थे, कोयल की आवाज की। कौवी ने सोचा- यह अभी विचित्र आवाज करता है, बड़ा होने पर क्या करेगा?' कौवी ने चोंच से मार-मारकर उसकी हत्या कर दी और घोंसले से नीचे गिरा दिया। राजा जहां बैठा था, वह बच्चा वहीं उसके पैरों के पास गिरा। राजा ने मंत्री से पूछा-मित्र ! यह क्या है? मंत्री को राजा की भूल बताने का यह अवसर मिल गया। मंत्री ने कहा- महाराज! अति वाचाल (बहुत बोलनेवालों) की यही गति होती है। पूछने पर मंत्री ने पूरी बात राजा को समझाकर बताई कि कैसे यह बच्चा असमय आवाज करने से नीचे गिरा और मृत्यु को प्राप्त हुआ। यदि यह चुप रहता तो यथा समय घोंसले से उड़ जाता। इतना कहकर मंत्री ने राजा को मौका देखकर उसकी वाचालता दूर करने के लिए प्रत्यक्ष उदाहरण बताकर नीति बताई। चाहे मनुष्य हो, पशु-पक्षी असमय अधिक बोलने से इसी तरह दुःख भोगते हैं। उसने वाणी के अन्य दोष और उसके दुष्परिणाम राजा को बताए। दुर्भाषित वाणी हलाहल विष के समान ऐसा नाश करती है, जैसा तेज किया हुआ शस्त्र भी नहीं कर सकता।

संदेश: बुद्धिमान व्यक्ति को चाहिए कि वाणी की समय, असमय रक्षा करें। अपने समकक्ष व्यक्तियों से कभी अधिक बातचीत न करें। जो बुद्धिमान समय पर विचारपूर्वक थोड़ा बोलता है, वह सबको अपने वश में कर लेता है। बुद्धिमान् और प्रज्ञावान् मंत्री की बात सुनकर राजा अति वाचालता के दोष को दूर कर मितभाषी हो गया और सुखपूर्वक राज्य करने लगा।

मेरी कलम से

किरण बेदी,
पूर्व आईपीएस एवं पूर्व राज्यपाल

ब्रह्माकुमारीज़ का ज्ञान समाज के पुनर्निर्माण में सहयोगी बनेगा: बेदी

हर चीज में पुनर्निर्माण की जरूरत है

शिव आमंत्रण, आबू रोड, राजस्थान।

मेरी पूरी जिंदगी में मैं एक ऐसे पड़ाव पर हूं जहां मैं यह देख रही हूं कि जीवन का पुनर्निर्माण होने वाला है। हम पुनर्निर्माण के चरण में हैं और पुनर्निर्माण मुश्किल प्रक्रिया है। निर्माण की प्रक्रिया आसान है जिसमें हम नए सिरे से सीमाओं का, बुनियाद का और वास्तुकला का निर्माण कर सकते हैं, लेकिन एक बनी बनाई इमारत को तोड़ने, उसके आधार को निकालने, इसे नया रूप देने और मलबे को साफ करने में उससे ज्यादा समय लगता है। अपने जीवन काल में मैं देख रही हूं कि पुनर्निर्माण की जरूरत है। चाहे वह मानव जीवन में हो या सार्वजनिक जीवन हो। हर चीज में पुनर्निर्माण की जरूरत है। जैसा कि मैंने कहा पुनर्निर्माण निर्माण करने से ज्यादा मुश्किल है। क्योंकि जब आप किसी चीज का निर्माण कर रहे होते हैं आप में निर्माण करने का उत्साह होता है लेकिन पुनर्निर्माण में पहले की बनी चीजों को हटाकर नया बनाने का तनाव होता है। आजीवन पुरानी को हटाकर नया बनाने के बारे में ज्यादा विश्वास करती हूं। हम एक-दूसरे को आने वाले पुनर्निर्माण में जगह दे पाएंगे। हम अपने सार्वजनिक जीवन के कुछ पहलुओं में बहुत बेईमान बन गए थे लेकिन हम ईमानदारी को फिर से वापस ला पाएंगे ऐसी हमें आशा है। आज हमारे जीवन को सुदृढ़ बनाने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान पूरी दुनिया में ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शाखा खोलकर लोगों को जागृत कर रही है। इनका ज्ञान समाज के पुनर्निर्माण में सहयोगी बनेगा।

आत्मिक समृद्धि में पवित्र स्थिति से श्रेष्ठतम अवस्था

जीवन का मनोविज्ञान

भाग - 62

- डॉ. अजय शुक्ला, बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल, ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर (स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

शिव आमंत्रण, आबू रोड, राजस्थान।

दिव्य गुणों, शक्तियों एवं खजानों की कुंजी आत्मा की पवित्रता में सन्निहित रहती है जिसके प्रकम्पन से ही सम्पूर्ण मानवता अभिभूत होकर सुख-शांति, आनंद की स्थायी अनुभूति में सहजता से रूपांतरित हो जाती है।

आत्म समृद्धि का नैसर्गिक आत्मज्ञानः नैसर्गिक आत्मज्ञान की अनुभूति से सुसज्जित चेतना आत्म समृद्धि की उपलब्धि द्वारा परमात्म सत्ता के सानिध्य में आत्मगत स्वरुप से उत्पन्न निश्चयात्मक एवं धारणात्मक श्रद्धा, सम्पूर्ण व्यक्तित्व को उच्चतम आयाम पर स्थापित कर देती है। जीवात्मा का अन्तर्मुखी परिवेश सदा स्वयं की गहन खोज में संलग्न रहकर जीवन के विभिन्न संदर्भ एवं प्रसंग में स्वचिंतन से उपजने वाले अति सूक्ष्म विश्लेशणात्मक अध्ययन के अंतर्गत आत्मा के नैसर्गिक स्वमान, स्वरुप एवं स्वभाव को आत्मसात करने का पुरुषार्थ करता है।

आत्म समृद्धि की अनुभूति का आंकलन करते हुए जब आत्म तत्व स्वयं की वैभव संपन्नता पर गौरवान्वित होता है तब नैसर्गिक स्वरुप में विद्यमान आत्मज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका का संबोधन महामानव के संबंध में सुनिश्चित हो पाता है। युगदृष्टा के रूप में देवात्मा के अवतरण द्वारा आत्महित की अनवरत सम्बद्धता का नैसर्गिक परिदृश्य विकसित होने से आत्म समृद्धि पूर्णतः मानवीय संवेदनशीलता के रूप में नवीन प्रतिमान गढ़ने की अविरल धारा समदृश्य प्रवाहित होने लगती है। आध्यात्मिक जगत की मूल्यनिष्ठता मानवीय चेतना में नैसर्गिक रूप से विद्यमान

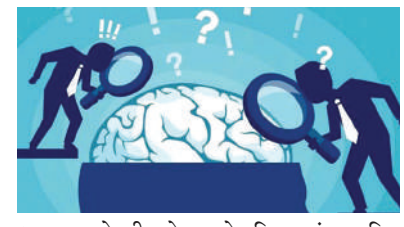

आत्मज्ञान के बीजारोपण को पुष्पित एवं पल्लवित होने के अवसर प्रदान करती है, जिससे जीवन के प्रांगण में आत्म समृद्धि की जीवंतता सुगंधित स्वरूप में चहूंओर व्याप्त हो जाती है ।

सुख-शांति एवं आनंद की उपयोगिताः ज्ञान एवं तत्व मीमांसा का दार्शनिक बोध सामाजिक परिदृश्य की गतिशीलता में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्रतिपादन से आत्मदृष्टि विकसित करने की स्थितियों को मानवता के कल्याणकारी स्वरुप के अंतर्गत संप्रेषित करने का अभिप्रेरणात्मक प्रयास करते हैं। धर्मगत आचरण के प्रति आंतरिक जिज्ञासा का फलितार्थ -मन,वचन एवं कर्म की पवित्रता का व्यावहारिक पक्ष है, जिसकी उच्चता को जीवन के स्थायित्व में रूपांतरित करने हेतु आध्यात्मिक पुरुषार्थ के अनुगमन और अनुसरण को सम्पूर्ण स्वीकारोक्ति के स्वरुप में ढालना अनिवार्य है। मानव जीवन में आत्म समृद्धि द्वारा उच्च आयाम की गौरवमयी उपलब्धि का आधारभूत स्रोत आत्मिक अनुभूति है जिसमें आत्मज्ञान के साथ सुख-शांति और आनंद की उच्चता का महानतम स्तर चेतनता की वैभवपूर्ण अवस्था के सानिध्य में निरंतर स्थित रहने से अनुभूत रहता है। जगत के प्राणी मात्र का मूलभूत उद्देश्य सुख-शांति एवं आनंद की प्राप्ति है जो अलौकिक रूप में भागीरथ प्रयत्न से बौद्धिक एवं भावनात्मक कौशल द्वारा सम्पादित होते हुए चेतना के चिंतनशील स्वरुप तक पहुंचकर आत्म हित को प्रमुखता से आत्मसात कर लेते हैं। सम्पूर्ण जीवनकाल में मनुष्य, आत्मा के स्वमान, सुख-शांति और आनंद की उपयोगिता को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अंतर्मन से स्वीकार करके आत्मगत अनुभूति के परिणाम को इसी जन्म में पूरी निष्ठा के साथ जीने की अभिलाषा को चेतना में संजोकर सदा गतिमान रहने का पुरुषार्थ करता रहता है ।

प्रेम, पवित्रता और शक्ति का रहस्यः आत्मगत वैभव सम्पन्नता के गूढ़तम रहस्य से नैसर्गिक संबंध और संबोधन की पारदर्शिता का अनुशीलन ही मानव जीवन में प्राप्त होने वाली उच्चतम अवस्था है जिसे प्रेमपूर्ण व्यावहारिकता से निभाते हुए स्वरुप बन जाने की आत्मीयता का आचरण परम आवश्यक होता है। दिव्य गुणों, शक्तियों एवं खजानों की कुंजी आत्मा की पवित्रता में सन्निहित रहती है जिसके प्रकम्पन से ही सम्पूर्ण मानवता अभिभूत होकर सुख-शांति और आनंद की स्थायी अनुभूति में सहजता से रूपांतरित हो जाती है। आत्मिक शक्ति के विश्लेषित स्वरुप में नित-नूतन व्यावहारिक उदाहरण से मानव जाति को अंतर्मन की ऊर्जा का अनुभव कराकर उसके उपयोग की विभिन्न स्थितियों का उल्लेख करते हुए आत्म तत्व के अजर, अमर, अविनाशी, अचल, अडौल एवं स्थितप्रज्ञ रूप की महिमा को सदा अभिव्यक्त करते रहते हैं। जीवन की दुर्लभता में आत्मिक योग का सम्मिश्रण ढाई आखर के प्रेम से आरम्भ होते हुए अहिंसा परमो धर्मः की प्रगाढ़ता में सम्पूर्ण समर्पण से सर्वगुण सम्पन्नता के सर्वोच्च स्वरुप अर्थात् सोलह कला सम्पूर्ण के साथ सम्पूर्ण निर्विकारी अवस्था की उच्चता में स्थापित हो जाता है । आत्मिक समृद्धि की उच्चता को आध्यात्मिक मूल्य के द्वारा प्रबल पुरुषार्थ से प्राप्त करके मानवीय संचेतना की संवेदनशील उपलब्धि को व्यावहारिक क्रियाविधि के अंतर्गत जीवन की सहजता,सरलता, विनम्रता की पराकाष्ठा के माध्यम से अनुभव किया जा सकता है।

"जीवन लंबा नहीं बल्कि महान होना चाहिए।"

- डॉ. बाबा साहब बीआर आंबेडकर

"दूसरों के लिए भी वही चाहो जो तुम अपने लिए चाहते हो।"

- महर्षि वेदव्यास

दिव्यांगों को अध्यात्म से जोड़ने की देशव्यापी पहल

अखिल भारतीय मध्यप्रदेश दिव्यांग समानता, संरक्षण एवं सशक्तिकरण अभियान

दिव्यांगों के आध्यात्मिक सशक्तिकरण को लेकर ब्रह्माकुमारीज़ के दिव्यांग सेवा प्रभाग की ओर से देशव्यापी दिव्यांगजन सेवा अभियान चलाया जा रहा है। इसका मकसद दिव्यांगों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने, उन्हें सकारात्मक रूप से प्रेरित कर मनोबल बढ़ाने, राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा देना है। अभियान के तहत दिव्यांग छात्रावास, हॉस्पिटल, स्कूल-कॉलेज आदि में कार्यक्रम आयोजित कर मोटिवेट किया गया। मप्र में मध्यप्रदेश दिव्यांग समानता, संरक्षण एवं सशक्तिकरण अभियान भोपाल और इंदौर से चलाए गए। जिनके माध्यम से आसपास के जिलों को कवर किया गया। मप्र में अभियान के तहत की गई सेवाओं की एक रिपोर्ट....

दिव्यांगता को नहीं बनने देते मजबूरी, मूक होकर भी सब बोल जाते हैं

शिव आमंत्रण, छतरपुर/मप्र| अपने अभावों में भी स्वयं को कमजोर नहीं होने देते। वे अपना मार्ग स्वयं प्रशस्त करते हैं और दिव्यांगता को अपनी मजबूरी नहीं बनने देते। मूक होकर भी इशारों से सबकुछ बोल जाते हैं। उक्त उद्गार 'मध्यप्रदेश दिव्यांग समानता, संरक्षण एवं सशक्तिकरण अभियान' के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज किशोर सागर में आयोजित कार्यक्रम में भोपाल से पधारे बीके दीपेंद्र भाई ने व्यक्त किए। दृष्टिहीन अखिलेश मिश्रा बरोही ग्राम में जाकर बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। उनकी सेवा भावना के लिए विशेष रुप से सम्मान किया गया। नेशनल व्हीलचेयर क्रिकेट विजेता बसंत कुमार, संतोष कुशवाहा, उमेश मौर्या, रिजवान खान को भी स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर समाजसेवी संजय शर्मा, सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शैलजा दीदी, प्रगतिशील दिव्यांग संसार की समस्त शिक्षिका साधना असाटी, साइन लैंग्वेज शिक्षिका नीलम पटेल, शिक्षिका सुनीता अहिरवार, दिव्यांग हेल्प फाउंडेशन एवं विकलांग कल्याण समिति के युवा भाई व अभियान यात्री मौजूद रहे।

दिव्यांग सशक्तिकरण अभियान का कलेक्टर ने किया स्वागत

विदिशा (मप्र)| मध्य प्रदेश दिव्यांग समानता, संरक्षण एवं सशक्तिकरण अभियान के आगमन पर विदिशा कलेक्टर उमाशंकर भार्गव ने स्वागत किया और झंडी दिखाकर आगे के लिए रवाना किया। इस मौके पर बीके रेखा दीदी, बीके रुक्मिणी दीदी, बीके सरिता दीदी एवं बीके दीपेंद्र भाई मौजूद रहे।

दिव्यांगजन में होती है बहुत क्षमता : संयुक्त संचालक दुबे

शिव आमंत्रण, रीवा/मप्र। दिव्यांग जन सेवा अभियान के पहुंचने पर यात्रियों का स्वागत किया गया। संयुक्त संचालक रीवा संभाग अनिल दुबे ने कहा कि दिव्यांगजन में क्षमता बहुत होती है। वे अपने आत्मबल से आगे बढ़कर ऊंचा मुकाम हासिल कर लेते हैं, इसलिए समाज को उनको सम्मान करना चाहिए। सीएमएचओ डॉ. बीएल मिश्रा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ का दिव्यांगों की सेवा के लिए बहुत ही बढ़िया अभियान चला रही है। आप सब परमात्मा की विशेष कार्य के लिए निमित्त बनाए हुए साधक हैं। वाइस चेयरमैन भारतीय रेडक्रॉस सोसाइटी हाजी एके खान साहब, सैनिक स्कूल प्राचार्य कर्नल अविनाश रावल, नेहा रावल, समाजसेविका श्लेषा शुक्ला ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सेवाकेंद्र संचालिका बीके निर्मला बहन ने यात्रा दल के साधकों का स्वागत किया। समाजसेवी विमल दुबे, पत्रकार राहुल मिश्रा, प्राचार्य दीपक तिवारी, बीके नम्रता, बीके अंजना, लोकप्रिय गीतकार नीलेश श्रीवास्तव ने स्वागत किया। आभार बीके डॉ. अर्चना बहन ने माना। यात्रा के संयोजक बीके दीपेंद्र भाई ने भी विचार व्यक्त किए।

दिव्यांगों को विशेष शक्ति, आत्म बल प्राप्त होता है: तहसीलदार

शिव आमंत्रण, आलीराजपुर/मप्र। दिव्यांग अभियान के आलीराजपुर पहुंचने पर स्कूल ऑफ रिहैबिलिटेशन सेंटर फॉर द ब्लाइंड बच्चों के लिए शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय में कार्यक्रम आयोजित किया गया। यहां अभियान यात्रियों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम में तहसीलदार जितेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि दिव्यांग बच्चों को विशेष शक्ति और आत्मबल प्राप्त होता है। माउंट आबू से आए बीके अतुल, धार्मिक प्रभाग के जोनल को-ऑर्डिनेटर बीके नारायण ने नैतिक मूल्यों के बारे में बताया। बीके प्रिया बहन ने प्रतिज्ञा करा कर राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराया। विजेता बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

दिव्यांग बच्चों को किया मोटिवेट

शिव आमंत्रण, सागर/मप्र। मध्यप्रदेश दिव्यांग समानता, संरक्षण और सशक्तिकरण अभियान के सागर पहुंचने पर दिव्यांग बच्चों के लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें घरौंदा पुनर्वास केंद्र से एवं आसपास के करीब 70 दिव्यांग बच्चे शामिल हुए। वक्ताओं ने वैल्यु गेम्स से गुणों का महत्व बताया। सागर क्षेत्र की निदेशिका बीके छाया दीदी ने सभी अभियान यात्रियों का स्वागत किया। बीआरसी अनिरुद्ध दवे ने भी विचार व्यक्त किए। साथ ही संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण कार्यालय, शासकीय दृष्टि एवं श्रवण बाधितार्थ हायर सेकंडरी विद्यालय पंडापुरा बाघराज वार्ड में दिव्यांग बच्चों को आध्यात्मिक ज्ञान की अनुभूति कराई गई।

समाज को आत्मा का भोजन परोस रही है ब्रह्माकुमारीज़

शिव आमंत्रण, ग्वालियर(मप्र)| दिव्यांगजन सशक्तिकरण अभियान के पहुंचने पर ब्रह्माकुमारीज़ प्रभु उपहार भवन माधौगंज सेवाकेंद्र पर सभी यात्रियों का स्वागत किया गया। झांसी रोड स्थित माधव दृष्टि बाधित आश्रम में बच्चों के लिए कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें भाजपा के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य आशीष प्रताप सिंह, बीके सरिता दीदी, भोपाल से आए दीपेंद्र भाई, शशिकांत द्विवेदी ने संबोधित किया। स्कूल के प्राचार्य रामलाल केवट ने कहा कि ब्रह्माकुमारी बहिनें देशभर में समाज को आत्मा का भोजन परोस रही हैं। बच्चों को मूल्य आधारित गेम खिलाए गए एवं विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए।

इंदौर जोन में 15 दिनी अभियान चलाया

शिव आमंत्रण, इंदौर| ब्रह्माकुमारीज़ के जोनल मुख्यालय ओम शांति भवन एवं दिव्यांग प्रभाग द्वारा जोन में 15 दिवसीय दिव्यांग समानता, संरक्षण एवं सशक्तिकरण अभियान चलाया गया। इसके तहत आसपास के जिलों में दिव्यांग स्कूलों में कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों को मोटिवेट और सम्मानित किया गया। शुभारंभ कार्यक्रम महेश दृष्टिहीन स्कूल और रोटरी पाल हेरिस स्कूल में आयोजित किया गया। इस दौरान जोनल निदेशिका बीके आरती दीदी, माउंट आबू से आए बीके सूर्यमणि, लायंस क्लब यूनिक के अध्यक्ष जितेन्द्र राठी, रोटरी पाल हेरिस स्कूल के सचिव सरजीव पटेल, रोटरी क्लब इन्दौर वैली के अध्यक्ष राकेश बमोरिया, बीके आशा बहन, धार्मिक प्रभाग के जोनल को-ऑर्डिनेटर बीके नारायण, बीके भारती, बीके प्रिया मौजूद रहीं।

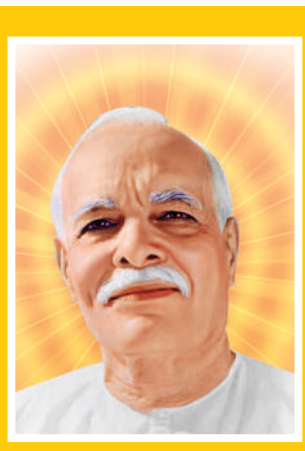

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा, संस्थापक,
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय
विश्व विद्यालय, माउंट आबू

ईश्वरीय ज्ञान सुन कर तेजी से बढ़ने लगी भाई-बहनों की संख्या

रियल लाइफ

लोगों के निमंत्रण पर तेजी से खुलते गए सेवाकेंद्र

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

लोगों के संपर्क में आने से हमें संसार की हालत का और अच्छी तरह पता लगा। हमने अनुभव किया कि सचमुच आज दुनिया की ऐसी हालत हो गई है और इन्सान अन्ध-श्रद्धा, तत्व-पूजा और गुरुडम की जंजीरों में ऐसी बुरी तरह जकड़ चुका है कि उसे इनसे मुक्त करना किसी मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर है। स्वयं सर्वशक्तिवान् परमपिता परमात्मा ही इन्हें अज्ञान की गहरी नींद से जगा सकते हैं। सचमुच परमपिता परमात्मा का इस समय जो अवतरण हुआ है वह बिल्कुल ठीक समय हुआ है।

एक ओर देश और धर्म की हालत को देखकर दूसरी ओर परमपिता परमात्मा के वर्तमान समय हुए दिव्य अवतरण को जानते हम वहां सभी मनुष्यात्माओं को स्नेह से और उनकी शुभ चिन्तिका होकर कहती थीं, उठो अब रात बीत चली प्रभात देख लो। उठो कंगाल सिर पे अपने दोहरा ताज लो। युगों की आश मन की मानी, आज तृप्ति लो। मनुष्य सारे बन्धनों से आज मुक्ति लो। भगवान आ गए हैं करने आश को पूरण। फिर से जग में आ गए हैं शिव पतित-पावन। ये वक्त की पुकार है पवित्र अब रहो। ये जिन्दगी का सार है, शिव के हो रहो।

अंत का ये काल, अब राह मोड़ दो...

विष का लेन-देन आज अब ही छोड़ दो। अंत का ये काल अब तो राह मोड़ दो।। बढ़ते आ रहे हैं महामृत्यु के चरण। फिर से जग में आ गए हैं शिव पतित-पावन। वे हमारे इस ईश्वरीय सन्देश पर ध्यान नहीं देते थे, क्योंकि वे तो गंगाजल में डुबकी लगाने से ही पावन होने की आशा लिए बैठे थे। फिर भी हम अपना कर्तव्य पालन करने के लिए लोगों को कहती रहती- तुम्हें पावन बनाने को, स्वयं भगवान आए हैं। उठो! अब नींद को त्यागो, जगाने आज आए हैं। भागीरथ ब्रह्मा के तन से वे देते ज्ञान हैं उज्जवल, नहा लो ज्ञान-गंगा में यही सन्देश लाए हैं। तुम्हें पावन बनाने को, स्वयं भगवान आए हैं। उठो! अब नींद को त्यागो जगाने आज आए हैं। ईश्वरीय सेवाकेन्द्रों की स्थापना अब देहली में तो एक ईश्वरीय सेवाकेन्द्र कमला नगर में स्थापित हो ही गया था। इधर, जो ब्रह्माकुमारी बहनें इलाहाबाद गई थीं, उन्हें वहां कानपुर में आकर ईश्वरीय ज्ञान की शिक्षा देने के लिए निमंत्रण मिला था। कानपुर में जब उस निमंत्रण पर जाना हुआ तो वहां के एक प्रसिद्ध उद्योगपति बाबू हरविलास राय के सम्पर्क में आए। वह विभिन्न धार्मिक संस्थाओं, जैसे आर्य समाज, गुरुद्वारों की प्रबन्धक कमेटी, अहलूवालिया बिरादरी आदि-आदि कमेटी के मान्य सदस्य अथवा प्रधान भी रह चुके थे और उनके यहां प्रायः साधु-सन्त आकर प्रवचन करते तथा ठहरा करते थे। उन्होंने और उनकी धर्म-पत्नी ने इस ईश्वरीय ज्ञान को समझा और अपने ही विशाल बंगले का एक भाग ईश्वरीय सेवार्थ बहनों को रहने के लिए दिया। अतः वहां भी एक ईश्वरीय सेवाकेन्द्र खुल गया।

धीरे-धीरे अच्छे घरों के लोग भी जुड़ने लगे-

उससे कुछ ही समय पहले लखनऊ में भी ब्रह्माकुमारी हृदयमोहिनी जी और ब्रह्माकुमारी शान्तामणि जी वहां के लोगों के निमंत्रण पर सेवार्थ गई थीं और सेवाकेन्द्र स्थापित हो चुका था। अब लोगों के निमंत्रण पर स्थायी सेवाकेन्द्र स्थापित होते गए। लोग ही स्वेच्छा से सेवाकेन्द्रों को कायम रख कर ज्ञान, सहज राजयोग से लाभ उठाने लगे। शीघ्र ही गुड़गांव, मेरठ, सहारनपुर आदि में भी लोगों के निमंत्रण पर ईश्वरीय सेवा केन्द्र खुल गए। लखनऊ और कानपुर में भी जिज्ञासुओं की संख्या बढ़ने लगीं। सभी स्थानों पर अच्छे-अच्छे कुलों के लोग आने लगे। जो भी जिज्ञासु आते थे, उनसे एक परिचय-पत्र भराया जाता था ताकि उन्हें भी यह मालूम हो सके कि वे किस उद्देश्य से यहां आए हैं और यहां उन्हें क्या प्राप्ति होगी। उन द्वारा लिखे गए उत्तरों को लेकर उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान स्पष्ट रूप से समझाया जाता था।

प्रेरणापुंज

पवित्रता से ही सत्यता को परखने, सही रास्ते पर चलने की शक्ति मिलेगी

फैमिलियरटी का बहुत खराब कीड़ा है जो नष्टोमोहा, सम्पूर्ण पावन बनने नहीं देता

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

किसने पूछा तुम ब्रह्मा बाप को इतना प्यार क्यों करती हो? बाबा कितना हमको अपने पांव पर खड़ा करने के लिए निराधार बनाता है। गुप्त सहारा इतना देता है जो एक सेकंड भी नहीं छोड़ता है। हम थोड़ा दूर होते हैं तो युक्तियों से समीप बुला लेता है। अच्छा सोचने का तरीका सिखाता है। बुद्धि को चलाना, सिखाता है।

राजयोगिनी दादी जानकी,
पूर्व मुख्य प्रशासिका,
ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू

हम बच्चे हैं, अभी भी हमारे बचपन के दिन भूल नहीं सकते हैं। पालना ही ऐसी मिली है जिससे हमारे ईश्वरीय संस्कार बन जाएं। पालना ऐसी है जो सब कर्मबन्धन से मुक्त कर देती है। बाबा ने कहा सेकंड में नष्टोमोहा हो सकते हैं, किसको अनुभव है? हमको यह अनुभव है, एक सेकंड में, एक मिनट भी नहीं लगा। लौकिक बाप खड़ा है, बाबा की दृष्टि मिलते ही आवाज निकला 'तू मेरा है'। लौकिक बाप का अति प्यार, उसका अति मोह लेकिन हमारा मोह नहीं गया। मोह को छोड़ना सेकंड में बुद्धि का काम है। ब्रह्मा बाबा, शिवबाबा कुछ पता नहीं लेकिन ईश्वरीय आकर्षण ने अपने तरफ खींच लिया। उसका फायदा यह हुआ, लौकिक वा ईश्वरीय परिवार में किसी में मोह नहीं रहा। कोई छोड़कर आए लेकिन यहां फैमिलियरटी में आ जाए, यह बीमारी सुख से, शान्ति-प्रेम से जीने नहीं देती। सच्चा नष्टोमोहा बनने नहीं देती। मोह जीत बनने में फैमिलियरटी विघ्न डालती है। बात करने की खींच होगी, लेन-देन करने की, चीज़ देने लेने की बीमारी लग जाती है, यह कैंसर की बीमारी है। जैसे टीवी देखना टीबी की बीमारी है। अन्दर से सारी शक्ति खत्म कर देती है। फैमिलियरटी की बीमारी कैंसर की बीमारी है, लग गई तो बिरला कोई बचता है। सपूत और सर्विसएबुल बनने में विघ्न डालने वाली यह बीमारी है। एक से छूटेंगे तो दूसरे तीसरे से लग जाएंगे। छोड़ेगी नहीं। अन्दर की यह कमजोरी है, कमजोर को इन्फेक्शन हो जाता है। बाबा भी भल उम्मीद रखे अभी ठीक है, लेकिन फिर आ जाती है। इसलिए बाबा ने इलाज सुनाया - एक ही बात मुझे अन्दर से मीठे बाबा की याद में रहना है और पवित्रता ऐसी धारण करनी है जो सत्यता को परखने की, सही रास्ते पर चलने की, परीक्षाओं को पार करने की शक्ति बाबा से खींच सकूं।

फैमिलियरटी से दूर रहें : फैमिलियरटी बाबा से शक्ति लेने से वंचित कर देती है, बीच में दीवार आ जाती है, देही-अभिमानी बनने नहीं देती। जिस घड़ी कोशिश करेंगे, अन्दर देह-अभिमान का कीड़ा है तो जहां रग होगी वहां बुद्धि जाएगी। जिगर से बाबा नहीं निकलेगा। शुक्रिया बाबा, मीठा बाबा.. बाबा ही सबकुछ देने वाला है। धन मेरे पास कुछ नहीं हो, परन्तु कभी ऐसा ख्याल नहीं आया होगा कि फलाना मुझे देने वाला है, उससे ले लूं। बाबा बैठा है, पता नहीं कैसे आ जाता है। कभी ख्याल ही नहीं चल सकता। साहूकारों को नशा होगा 'मैं देता हूं, इसलिए बाबा को गरीब बच्चे प्यारे लगते हैं, बाबा गरीब निवाज है।

प्रकृति का मालिक हमारा बाप है : प्रकृति साथ तब देती है जब किसी भी प्रकार से हम अधीन नहीं हैं। प्रकृति के बिगर आत्मा पार्ट नहीं बजा सकती। पांच तत्वों की स्टेज है, पांच तत्वों के शरीर में आत्मा बैठी है लेकिन साथ दे। वह तब होगा जब आत्मा को अन्दर से नशा हो कि इस प्रकृति का मालिक हमारा बाप है। इसको सतोप्रधान बनाने के लिए मैं बैठी हूं। जिस स्थान पर बैठी हूं उसमें भी अटैचमेंट न हो। सर्विस साथी भी मेरे नहीं हैं जो फैमिलियरटी हो। सर्विस में साथ दे रहे हैं तो उनका भाग्य है।

अव्यक्त इशारे

साफ दिल से ही पूरे होते हैं हमारे संकल्प और आशाएं

मैं और मेरापन छोड़कर निमित्त भाव से करें सेवा

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

साफ दिल नहीं है तो जो हमारी आशाएं या संकल्प हैं वह पूरे नहीं होते हैं। इसमें बाबा का दोष नहीं है, पता नहीं क्यों...फिर दिलशिकस्त हो जाते हैं। बाबा मेरे से बात ही नहीं करता, रेसपाण्ड ही नहीं देता। फिर कोई न कोई व्यक्ति को अपना साथी बना देते हैं। लेकिन बाबा क्यों नहीं उत्तर देगा, बाबा बंधा हुआ है, हमको बाबा

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी (गुलजार दादी), पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

ने अपना बनाया है, बाबा ने हमको ढूंढा है। हमको तो परिचय ही नहीं था। तो बाबा बंधा हुआ है, जैसे मां-बाप छोटे बच्चे के लिए ज़िम्मेवार हैं। यह तो बाबा है, यह तो धोखा देगा ही नहीं। बाबा तो क्षमा का, प्यार का सागर है, हमको भीख नहीं मांगनी चाहिए, हमारा तो अधिकार है। कई तो रॉयल भिखारी बन जाते हैं। बाबा आप करो ना, बाबा आपको करना चाहिए ना। बाबा आज मेरे फलाने सम्बन्धी की बुद्धि का ताला खोलना। बाबा आज मेरा यह काम ज़रूर कराना ऐसे जैसे भिखारी। हमारा अधिकार है, बाबा ने हमको ढूंढकर अपना बच्चा बनाया है। क्या आप बाबा को पहचानते थे? हमने बाबा को नहीं ढूंढ़ा, बाबा ने हमें ढूंढ़कर अपना बनाया है, तो हमारा अधिकार है। अधिकार से बाबा को याद करो, रूह-रूहान करो तो क्यों नहीं बाबा रेसपांड देगा। रेसपांड माना कोई आवाज़ नहीं देगा। लेकिन बाबा से जो आपने बात कही, समझो आपने बाबा पर अधिकार रखा, दिल से बाबा पर कोई कार्य छोड़ा तो बाबा खुद ज़िम्मेवार होकर उस कार्य को पूरा करता है। यह रेसपांड हुआ, तो आपको यह अनुभव होगा। कई बार बातों की उलझन में होते हैं, उधेड़बुन में लग जाते हैं तो बाबा के रेसपांड का अनुभव नहीं होता है। लेकिन बाबा का रेसपांड चाहिए। बाबा की मदद का अनुभव चाहिए तो उसका आधार बुद्धि एकदम क्लीन और क्लीयर चाहिए। अगर हम बाबा की सेवा में बिज़ी हैं, तो बाबा की सेवा में बुद्धि क्लीयर रहेगी। अगर बाबा की सेवा है यह याद नहीं है, मेरी ज़िम्मेवारी है, मैं कर रही हूं यह अगर आ गया तो सेवा करते वह सफलता की मदद नहीं मिलेगी, क्योंकि मैं-पन आ गया।

बाबा ने सुनाया है कि माया के आने के दो दरवाज़े हैं – एक मैं और दूसरा मेरा। अभी यह हद का मैं और मेरा इन दोनों दरवाजों को बंद कर दो। मैं और मेरे करने की आदत पड़ी हुई है तो जब मैं शब्द बोलो तो यह सोचो कि मैं कौन, असली स्वमान से मैं कहो और जब मेरा कहते हो तो कहो 'मेरा बाबा'। सारे दिन में मेरे-मेरे का कितना विस्तार होता है और एक मेरा बाबा इसमें सब समाया हुआ रहता है। मेरापन क्यों होता है? मेरे से कोई प्राप्ति होती है, सुख मिलेगा, शान्ति मिलेगी, जो ज़रूरत है वह पूरी हो जाएगी। इसीलिए मेरा-मेरा आता है और बाबा से तो सबकुछ मिलता है। हद के मेरे से आपको अल्पकाल की प्राप्ति होगी और बाबा तो अविनाशी है, उससे अविनाशी प्राप्ति होगी। सब प्राप्ति होगी। तो अनेक मेरे के बजाए अगर मेरा कहना है तो कहो मेरा बाबा। मैं वह श्रेष्ठ आत्मा हूं, परमात्मा की बच्ची हूं। मैं अनादि बाबा के साथ थी, आदि में दिव्यगुणधारी आत्मा थी, वह याद करो। अज्ञान के वश जो मैं-मैं करते हैं, वह कितने बॉडी-कॉन्सेस होते। कभी अभिमान आएगा, कभी क्रोध आएगा। इसलिए इन दोनों दरवाज़ों को बंद रखना चाहिए। उसके लिए बाबा ने सबको डबल लॉक दिया है। एक पॉवरफुल याद और दूसरी निःस्वार्थ रूहानी सेवा। यह डबल लॉक है। अगर यह डबल लॉक लगा लो, इसी में ही मन-बुद्धि को बिज़ी रखो तो समझो आपने माया के आने का दरवाज़ा बंद कर दिया।

राजयोग सीखकर लोगों का जीवन बदल रहा है: प्रौद्योगिकी मंत्री पांडा

शिव आमंत्रण, माउंट आबू

ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान सरोवर परिसर में साइंटिस्ट एवं इंजीनियरिंग विंग द्वारा बेहतर कल की कल्पना विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें भारत और नेपाल से लगभग 450 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सम्मेलन के स्वागत सत्र में नागालैंड के पूर्व मंत्री लेफ्टिनेंट कर्नल दोशे वाई सेमा, कार्यकारी सदस्य बीके सुरेश गुप्ता, बीके नरेंद्र पटेल, बीके किरण दीदी, इंडियन प्लैनेटरी सोसाइटी हलवद के पूर्व अध्यक्ष डॉ. जेजे रावल मुख्य रूप से मौजूद रहे। उद्घाटन सत्र में ओड़िशा सरकार के विज्ञान और

प्रौद्योगिकी मंत्री अशोक चंद्र पांडा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा समाज के सभी वर्ग के लिए कल्याणकारी सेवाएं की जा रही हैं। लोगों की भलाई के लिए कार्य किए जा रहे हैं। राजयोग सीखकर लोगों का जीवन बदल रहा है। समाज वर्तमान में जिन समस्याओं से गुजर रहा है उनका समाधान सिर्फ अध्यात्म में ही समाया हुआ है।

ज्ञान सरोवर की निदेशिका राजयोगिनी डॉ. निर्मला दीदी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का नारा लेकर पिछले 87 वर्ष से समाज कल्याण और विश्व परितर्वन को लेकर सेवारत है। विंग के अध्यक्ष बीके मोहन सिंघल ने कहा कि विंग का मकसद है कि साइंटिस्ट, इंजीनियर का जीवन आध्यात्मिक हो, ताकि उनके सृजन में और रचनात्मकता आए और तनावमुक्त होकर कार्य करें।

भारत सरकार आयकर विभाग के आईआरएस एसके मिश्रा ने कहा कि यहां आकर बहुत ही सुकून और शांति की अनुभूति हुई। अध्यात्म हमें खुद से जोड़ता है। जीवन को सही दिशा प्रदान करता है। भुवनेश्वर की बीके गीता बहन ने राजयोग मेडिटेशन की गहन अनुभूति कराई। सम्मेलन में काठमांडू की बीके राज दीदी, गांधीनगर से डॉ. नरोत्तम साहू, आईएसएसए, डीआरडीओ नई दिल्ली के निदेशक शशि भूषण तनेजा उपस्थित रहे।

वृक्ष वंदन कार्यक्रम के तहत न्यायालय परिसर के बाहर रोपे पौधे

एक माह तक ब्रह्माकुमारीज़ ने चलाया 'वृक्ष वंदन कार्यक्रम'

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की ओर से पर्यावरण संरक्षण की दिशा में नई पहल शुरू की गई है। संस्थान की ओर से एक माह तक सघन पौधारोपण वृक्ष वंदन कार्यक्रम चलाया गया। इसके तहत आबू रोड शहर के अलग-अलग सार्वजनिक सरकारी कार्यालय और प्रमुख सड़कों के पास पौधारोपण किया गया। शुरुआत न्यायालय परिसर के बाहर सत्र न्यायाधीश मोहित शर्मा, न्यायाधीश गिरीशा शर्मा, नायब तहसीलदार मोहनलाल दांगी और संस्थान के कार्यकारी सचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई, पीआरओ बीके कोमल ने पौधा रोपकर की। उदयपुर की सामाजिक धरोहर संस्था के सहयोग से कार्यक्रम चलाया गया।

न्यायाधीश मोहित ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान ने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में बहुत ही अच्छी पहल शुरू की है। वर्तमान में हम

सभी को मिलकर पर्यावरण बचाने की जरूरत है। नायब तहसीलदार मोहनलाल दांगी ने कहा कि यह बहुत की खुशी की बात है कि शहर के सार्वजनिक स्थानों पर संस्थान की ओर से पौधारोपण किया जाएगा। प्रबुद्ध नागरिकों को भी इसमें बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए।

ब्रह्माकुमारीज़ लोगों को अंगदान के लिए करेगी जागरूक

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मेडिकल विंग की ओर से अंगदान-जीवनदान महा अभियान का शुभारंभ किया गया। इसके तहत अब देशभर में ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्रों के माध्यम से लोगों को अंगदान के प्रति जागरूक किया जाएगा। लोगों को सेमीनार के माध्यम से अंगदान का महत्व, प्रक्रिया आदि के बारे में बताकर मेडिकल में इससे होने वाले फायदों आदि के बारे में आमजन को रुबरु कराया जाएगा।

शांतिवन के डायमंड हाल में आयोजित शुभारंभ कार्यक्रम में मेडिकल विंग के कार्यकारी सचिव डॉक्टर बनारसी लाल ने कहा कि अंगदान जीवनदान महाअभियान शुरू किया जा रहा है, यह मानव जीवन रक्षा के तहत एक सराहनीय पहल है। अंगदान करना काफी महत्वपूर्ण है। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि आप सभी से अनुरोध है बिना किसी झिझक के इस पुनीत कार्य में अपना योगदान दें। संचालन वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके शारदा दीदी ने किया।

व्यायाम, संतुलित आहार, सही दिनचर्या और मेडिटेशन से स्तन कैंसर से बच सकते हैं: डॉ. सौम्या चिप्पागिरी

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)।

ब्रह्माकुमारीज़ के मीडिकल विंग की ओर से शांतिवन के ट्रेनिंग सेंटर में स्तन कैंसर की जांच, लक्षण और बचाव को लेकर एक दिवसीय वर्कशॉप आयोजित की गई। इसमें मुंबई के टाटा मेमोरियल कैंसर हॉस्पिटल से आई डॉक्टर्स की टीम ने संस्थान के डॉक्टर्स, मेडिकल स्टाफ और आबू रोड शहर के नर्सिंग स्टाफ के लिए जरूरी सुझाव और सावधानियां बताईं। वर्कशॉप में वाटुमुल ट्रस्ट मुंबई के मैनेजिंग ट्रस्टी डॉ. अशोक मेहता, टाटा मेमोरियल सेंटर, मुंबई की डॉ. शर्मिला पिम्पले ने कहा कि स्तन कैंसर के कई कारण हो सकते हैं। व्यायाम, संतुलित आहार, सही दिनचर्या और मेडिटेशन से स्तन कैंसर से बच सकते हैं। डॉ. गौरवी मिश्रा, डॉ.वसुंधरा कुलकर्णी, नर्स ज्योति बहन, स्वास्थ्य सहायक संगीता चव्हाण ने भी महिलाओं की जिज्ञासाओं का समाधान किया।

राज्यमंत्री बेनीवाल बोलीं- ठान लें तो जीवन में नामुमकिन कुछ भी नहीं

सात्विक भोजन से सकारात्मक ऊर्जा मिली

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)।

मेरा मूलमंत्र है जीवन में नामुमकिन कुछ भी नहीं है। मैं कर सकती हूं। कई बार परिस्थितियां आईं लेकिन खुद को कभी कमजोर नहीं होने दिया। मेरा मानना है कि आप जो भी कार्य करें पूरे समर्पित भाव से करें। इन दोनों बातों के साथ और मेहनत के साथ मैं आगे बढ़ी। आज जो हूं अपनी मेहनत और लगन के कारण हूं।

यह बात राज्यमंत्री राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग की अध्यक्ष संगीता बेनीवाल ने कही। वह ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के शांतिवन डायमंड हाल में सभा को संबोधित कर रहीं थीं। इस दौरान संस्थान की ओर से

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके गीता दीदी ने राज्यमंत्री बेनीवाल का शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया और स्मृति चिह्न भेंट किया। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में जिस समर्पित भाव से ब्रह्माकुमार भाई-बहनें सेवा करते हैं वह सीखने लायक है। यहां निःस्वार्थ भाव से बहनें समाजसेवा में लगी हुई हैं। यहां से मैं सकारात्मक ऊर्जा लेकर जा रही हूं। यहां दो दिन तक सभी भाई-बहनों ने बहुत ही प्रेम और आदर-सत्कार के साथ भोजन कराया।

स्व प्रबंधन जीवन में विस्तार को संकीर्ण करने की शक्ति बहुत जरूरी है

अंदर से भरपूर व्यक्ति धैर्यवान, गंभीर, अंतर्मुखी और न्यारा रहता है

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

जो बहुत ज्यादा विस्तार से बातें करता है, वह क्या कहना चाहते हैं कि यह व्यक्ति बात का बतंगड़ बनाके कहीं हमें फंसा न दे। कई बार तो छोटी सी बात का पहाड़ बना दिया जाता है। जबकि अब समय अनुसार पहाड़ जैसी बातों को राई समान बनाना है न कि राई का पहाड़।

राजयोगिनी ऊषा दीदी,
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका,
माउंट आबू

कई लोग बातों को बहुत चटपटी बनाकर दूसरों के आगे पेश करते हैं और उसे सुनने में लोग अपना समय और शक्ति नष्ट करते हैं। ऐसा वही करते हैं जिनको किसी तरह अपना मतलब सिद्ध करना होता है या लोभ वश कुछ प्राप्त करना चाहते हैं। कहने का भाव कि जब व्यक्ति अंदर से भरपूर होता है तो वह धैर्यवान गंभीर अंतर्मुखी और न्यारा रहता है। इसलिए कभी किसी भी परिस्थिति में फंसता नहीं है। दुनिया में लोग भी अक्सर वाचाल व्यक्ति को ही किसी-न-किसी बात के जाल में फंसाकर उसका फायदा उठाते या अपना दोष उन पर डाल देते हैं।

इसी प्रकार मानव में जब लोभ वृत्ति अधिक हावी हो जाती है, तब वह अपने विस्तार को संकीर्ण नहीं कर सकता। इसलिए इन अष्ट शक्तियों में 'विस्तार को संकीर्ण करने की शक्ति' आज के युग में महत्वपूर्ण है। इसको धारण करने के लिए अंतर्मुखता और न्यारा बनने की आवश्यकता है। इससे हम लोभ रूपी शत्रु पर विजयी हो सकते हैं। समेटने की शक्ति के लिए व्यर्थ को समाप्त कर बुद्धि को सशक्त कर समर्थ बनाना है।

ये दुनिया एक मुसाफिरखाना है

इस दुनिया में मनुष्यों ने अपने लिए बहुत सा पसारा डाल रखा है। भौतिक सुख-सुविधाओं के संग्रह की उसकी ऐसी लालसा रहती है कि मानो इस दुनिया से उसे जाना ही नहीं है। कहने में तो वह कहता है कि यह दुनिया एक सराय है या मुसाफिरखाना है। परन्तु जीवन में समय प्रति समय कुछ कार्यों को या बातों को समेटते भी जाना है, यह बात वह भूल जाता है।

वास्तव में जीवन के व्यावहारिक और आध्यात्मिक दोनों पहलुओं में समेटने की शक्ति की बहुत आवश्यक्ता है। चाहे वह व्यक्ति एक छोटे से परिवार का कर्ताधर्ता हो या कोई छोटे-बड़े व्यापार का मालिक हो। कोई छोटे-बड़े मंदिर अथवा आश्रम का मुखिया हो। परन्तु सभी जगह समेटने की शक्ति का यथार्थ उपयोग न होने के कारण व्यक्ति अपने पीछे अनेक प्रकार की समस्याएं औरों के लिए छोड़ जाता है। इसलिए देखा गया है कि कई बड़े-बड़े घरों में इसी कारण कई समस्याएं खड़ी हो जाती हैं। समेटने की शक्ति को धारण करने के लिए दो बातों को सदा स्मृति में रखना आवश्यक है।

जो हुआ अच्छा हुआ, जो होगा अच्छा ही होगा...

पहली बात, जब भी जीवन में कोई परिस्थिति या समस्या आ जाए तो व्यर्थ संकल्प चलाने के बजाय हमेशा यह याद रहे कि जो हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा ही हो रहा है और जो होने वाला है वह भी अच्छा ही होगा। इस सकारात्मक मन स्थिति से अच्छाई नज़र आने लगेगी। यह भी याद रखें कि यह दिन भी बीत जाएंगे। तो बातों को या संकल्पों को फुलस्टॉप लगाना या समेटना आसान हो जाएगा। दूसरी बात यह स्मृति में रहे कि यह दुनिया एक मुसाफिरखाना है और हम इस दुनिया में मुसाफिर हैं या मेहमान हैं तो कोई भी चीज में आसक्ति नहीं होगी और हमेशा यह याद रहेगा कि हम जीवन यात्रा पर हैं।

अध्यात्म की उड़ान निराधार की साधना करना है, ज्ञान की गहराई में जाना है

असंभव को भी संभव कर सकती है 'शांति की शक्ति'

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

यह निराधार की साधना है, अभ्यास निराधार का करना है। जो हमने आधार बना रखे हैं, वह सभी आधार, जिस-जिस को हम अपना सपोर्ट समझते हैं, वह सभी एक मन की विचित्रता मात्र है। एक दिन सारे आधार गिर जाने हैं, यह यात्रा अकेले हो जाने की है। अकेली आत्मा उस अकेले परमात्मा की ओर चली जाए, यही यात्रा है। जो यात्रा कल हमने की है उस यात्रा को आज भूलना नहीं है, कल की यात्रा याद रखना और आज की यात्रा याद रखने से एक और एक ग्यारह हो जाएंगे।

डॉ. बीके सचिन भाई,
राजयोग एक्सपर्ट,
माउंट आबू

अखंड पवित्रता का व्रत धारण करना है। शरीर को देखते हैं तो शरीर की मेमोरी वापस आती है। आत्मा में देह की यादें हैं। बाबा कहते हैं- जो बच्चे अपने को ज्ञानी समझते थे परंतु ज्ञानी हैं नहीं, ज्ञान की सीढ़ी हमने जो चढ़ी है वह सिर्फ सूचना मात्र है। जानने से मुक्त होना है। अभी बहुत कुछ जानना बाकी है। इस ज्ञान मार्ग में हमारी सबसे बड़ी बाधा ज्ञान ही है। ज्ञान अर्थात ज्ञान होने का भ्रम है। हमने जान लिया, समझ लिया, पता है यह अड़चन है। पहले मानें कि हमने अभी तक कुछ नहीं जाना है, तब यह यात्रा चालू होगी। अभी तक जो जाना, समझा है वह सिर्फ सूचना मात्र है। ज्ञान कोई सुनाए, हमें सिर्फ सुनना है, हमारी उत्सुकता सिर्फ ज्ञान लेने की और ज्ञान को धारण करने की रखना है। आध्यात्मिकता अर्थात ऊर्जा को बढ़ाना है। ऊर्जा के ऊपर कार्य करना है। शरीर और आत्मा के बीच एक शक्ति आती है उसका नाम प्राण है।

सबसे ज्यादा ऊर्जा कहां खर्च?

सबसे ज्यादा ऊर्जा बोलने में खर्च होती है। खाना पचाने में ऊर्जा खत्म होती है। व्यर्थ के चिंतन में हमारी ऊर्जा नष्ट हो जाती है। ऊर्जा का शुद्धीकरण करना है। ऊर्जा को बदलना है, ट्रांसलेशन करना है। आज की मुरली का वरदान शांति की शक्ति सर्वश्रेष्ठ शक्ति है। सभी शक्तियां इसी शांति की शक्ति से निकली हैं। एक ही शक्ति है, एक ही दिव्य गुण है, एक ही सब्जेक्ट है। एक सब्जेक्ट ज्ञान है, ज्ञान ही योग है, योग ही धारणा है, धारणा ही सेवा है, अगर श्रीमत पर नहीं चलते तो धारणा हो नहीं सकती। सभी शक्तियां शांति की शक्ति से निकली हैं। साइंस की शक्ति भी शांति की शक्ति से निकली है। शांति की शक्ति असंभव को भी संभव कर सकती है। दुनिया कहती है कि परमात्मा हजारों सूर्य से तेजोमय है लेकिन आप अपने अनुभव से कहते हो कि परमात्मा हमारा बाप है। हमने परमात्मा, भगवान को पा लिया है। परमात्मा शांति का सागर है। जो जो हमें असंभव लगता है उसकी लिस्ट बनानी है।

प्राणिक लिविंग जीवन...

हमने आत्मा को जाना है, परमात्मा को जाना है, शरीर को भी जानते हैं। अब शरीर और आत्मा की बीच की शक्ति, ऊर्जा है, उस शक्ति पर कार्य करना है। उस प्राणिक लिविंग जीवन पर कार्य करना है। रोज नए 30 शब्दों को निकालना है। डिक्शनरी से निकालो, डिक्शनरी खरीदो। मन को नई-नई चीजें पसंद हैं, इसलिए नए-नए शब्द निकालने हैं। नए शब्दों से नई नवीनता आएगी। उन पर स्वमानों का अभ्यास करना है। योग में उन शब्दों का प्रयोग करना है। क्योंकि शब्दों में ऊर्जा है, शब्द बदलने से चेतना बदल जाती है। आज सारे दिन में 10 नए शब्द ढूंढ़ने हैं। मैं बलशाली हूं। मैं बलबीर हूं। मैं बलवान हूं। इन शब्दों को बदलने से आत्मा में, चेतना में शक्ति आ जाती है।

समस्या- समाधान

सुबह उठते ही करें महान, श्रेष्ठ और शक्तिशाली संकल्प

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

> योगी के लिए दिनचर्या और आत्म-निरीक्षण की विधि

कुछ लोग कहते हैं कि ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा प्राप्त करने के बाद पहले-पहले तो हमें अपने जीवन में काफी परिवर्तन महसूस हुआ परन्तु अब ऐसा लगता है कि उन्नति की गति मंद पड़ गई है। जिस अव्यक्त स्थिति को हमें प्राप्त करना है, उसका चित्र तो हमारे सामने स्पष्ट है परन्तु उस तक पहुंचने में हमारी गति में सन्तोषजनक तीव्रता नहीं आई है। अतः वे जानना चाहते हैं कि अब गति में तीव्रता लाने के लिए क्या साधन अपनाया जाए?

ध्यान से देखा जाए तो गति मंद अथवा अतिभंग होने के पांच ही मुख्य कारण होते हैं। यदि उन कारणों का निवारण करने का पुरुषार्थ हम करें तो आत्मोन्नति की पराकाष्ठा पर पहुंच सकते हैं।

- राजयोगी बीके सूरज भाई,
माउंट आबू

अवस्था का आधार है चर्या-

मनुष्य की अवस्था का सारा आधार उसकी 'चर्या' है। चर्या में दिनचर्या भी शामिल है, सांध्यचर्या भी और रात्री चर्या भी। मनुष्य सोकर जब उठता है और आंख खोलता है। अथवा पहला संकल्प करता है तब से उसकी दिनचर्या प्रारम्भ हो जाती है और रात्रि को सुषुप्त अवस्था तक जो भी संकल्प-विकल्प या कर्म करता है, वे सभी उसकी चर्या में ही गण्य हैं। यहां तक कि जो स्वप्न वह देखता है, वह भी एक प्रकार से उसकी चर्या का ही अर्द्धचेत अवस्था में विस्तार है। चर्या नियमित, सन्तुलित एवं ज्ञानानुकूल न होने से भी मनुष्य का आध्यात्मिक पुरुषार्थ ढीला हो जाता है। अतः सबसे पहले मनुष्य को अपनी चर्या पर ही ध्यान देना चाहिए। यहां हम चर्या के कुछ आवश्यक पहलुओं पर प्रकाश डाल रहे हैं।

ठीक मनसा से सोना-

प्रातः ठीक समय पर उठने के लिए और मानसिक-शारीरिक तौर पर चुस्त महसूस करने के लिए आवश्यक है कि हम ठीक समय पर सोयें। यद्यपि निद्रा पर जितनी विजय प्राप्त हो सके उतना अच्छा ही है। देखा गया है कि रात्रि को सोने के लिये 10 बजे का समय एक आदर्श समय होता है। क्योंकि इस समय सोने से मनुष्य प्रातः 3 या 4 बजे उठ सकता है और उस समय के एकान्त, शान्त और सतोगुणी वातावरण में योगाभ्यास एवं प्रभु-मिलन का आनन्द ले सकता है। यदि कोई मनुष्य 10 बजे की बजाय देरी से सोता है तो वह या तो प्रातः देर से उठता है या उसे दिन-भर थकावट, आलस्य, भारीपन या निद्रा का प्रवाह महसूस होता है। इसका प्रभाव उसकी सारी दिनचर्या पर पड़ता है। अतः अपनी दिनचर्या को ठीक करना ज़रूरी है।

मानसिक तैयारी जरूरी-

रात्रि को निद्रा के लिए मानसिक तैयारी भी हमें ज्ञानानुकूल ही करनी चाहिए। शयन-शैय्या पर बैठकर पहले हमें कुछ समय शिव बाबा परमपिता परमात्मा की मधुर स्मृति का अभ्यास करना चाहिए। यदि हमारे पास अधिक समय न भी हो या हम थकावट महसूस कर रहे हों तो भी पांच मिनट ही सही, परन्तु हमें ईश्वरीय स्मृति में बैठना अवश्य ही चाहिए। सोने की चारपाई पर जाकर पड़ जाना यह योगी की चर्या नहीं है। योगी तो पहले अपने बिस्तर को ठीक करके, हाथ-मुंह स्वच्छ करके तब चारपाई पर बैठता है। सहज रूप से उस पिता, माता अथवा साजन रूप परमात्मा से वह मनोमिलन मनाता है, वह इस स्थूल लोक में सोने से पहले स्वयं को सूक्ष्म प्रकाशमय लोक में ले जाता है और अपने स्वरूप का और प्रभु का चिन्तन करते हुए उस परमपिता से निद्रा के लिए आज्ञा लेकर आत्मिक स्थिति में लेट जाता है। मानो वह अपनी कर्मेन्द्रियों रूपी नौकर-चाकरों को आराम के लिए छुट्टी दे देता है और स्वयं निःसंकल्प अवस्था में टिक जाता है। ऐसे सोने वाले योगी की निद्रा भी सतोगुणी या योगनिद्रा होती है और उसे तमोगुणी स्वप्न नहीं आते, बल्कि वह सतयुगी पावन सृष्टि में, सूक्ष्म देवलोक के अथवा पुरुषोत्तम संगमयुगी ज्ञान जगत के ही स्वप्न देखता है। वह जिस समय उठने का संकल्प करके सोता है, उस समय ही जाग जाता है।

उठने के समय के लिए विधि-

प्रातः उठते ही सबसे पहला संकल्प, मन रूपी आंख के सामने पहला दृश्य और बुद्धि में सबसे पहली स्मृति उस परमपिता परमात्मा ही की आनी चाहिए और चारपाई पर उठकर योग से ही अपनी दिनचर्या की शुरुआत करनी चाहिए। अपने मन में यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि आज दिनचर्या और अवस्था कल की अपेक्षा ज्यादा अच्छी रहेगी। प्रातः मनुष्य का मन सतोगुणी अवस्था में, चुस्त, मुद्रित और सन्तुष्ट होता है।

उस समय प्रतिज्ञा करना अथवा शुभ संकल्प करना गोया कार्यक्षेत्र में उतरने से पहले अपने मनोबल को एक दिशा देने की तरह है जो बहुत ही लाभप्रद है। कहावत है कि मनुष्य जैसा सोचता है वैसा ही हो जाता है। प्रातः के समय में सोचने से तो मनुष्य सचमुच वैसा ही हो जाता है। अतः अपने पुरुषार्थ में तीव्रता लाने के लिए कृत संकल्प होकर ही अपना पांव चारपाई से नीचे धरना चाहिए।

अच्छी सोच, बेहतर जिंदगी : इंडोर स्टेडियम में शिवानी दीदी को सुनने उमड़े लोग, एक झलक पाने के लिए दिखे उत्सुक

हमारा सोचना, बोलना, करना समान हो : शिवानी दीदी

शिव आमंत्रण, रायपुर (छग)।

ब्रह्माकुमारीज़ के शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर की ओर से इंडोर स्टेडियम में भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें मुख्य वक्ता के रूप में पधारीं जीवन प्रबन्धन विशेषज्ञ एवं मोटिवेशनल स्पीकर ब्रह्माकुमारी शिवानी दीदी ने अच्छी सोच बेहतर जिन्दगी विषय पर कहा कि हमारा सोचना, बोलना और करना समान होना चाहिए, तभी हमारे विचारों की तरंगें अच्छी होंगी। इसलिए सदैव अच्छा सोचें, सबके कल्याण का सोचें, सभी को दुआएं दें। क्योंकि जो हम संकल्प करते हैं वह तरंगित होकर प्रकम्पन (वायब्रेशन) के रूप में दूसरों तक पहुंचते हैं। पुरानी बातों को क्षमा करें और भूल जाएं। उसे गांठ बांधकर न रखें। दिन की शुरुआत सकारात्मक विचारों के साथ राजयोग मेडिटेशन से करना चाहिए। निज स्वरूप की याद से हमारी सोच अच्छी बनेगी। हमारी स्क्रीन को देखने की आदत बन गई है। सारा दिन मोबाइल और टेलीविजन की स्क्रीन को देखते हैं जिससे हमारी आंखों पर बुरा असर पड़ता है। यह भी एक तरह का नशा बन गया है जो कि हमारी आदत में शामिल हो चुका है। इसे बदलने की जरूरत है। हम अपने संस्कार को बदलकर दूसरों के लिए प्रेरणा स्रोत बन सकते हैं। इसे लीडरशिप क्वालिटी कहते हैं। हम अपना निरीक्षण करने की बजाए दूसरों को देखने लगते हैं और उनकी गलतियां निकालने लगते हैं। इसलिए हमें अपने ऐसे बुरे संस्कारों को बदलने की जरूरत है। संस्कार कैसे बनता है यह प्रोग्रामिंग ज्ञात होने पर संस्कार बदलना आसान हो जाएगा।

इस मौके पर पूर्व मंत्री एवं विधायक बृजमोहन अग्रवाल, गृहनिर्माण मंडल अध्यक्ष कुलदीप जुनेजा, संसदीय सचिव विकास उपाध्याय, महिला आयोग अध्यक्ष किरणमयी नायक, सन्त साईं युधिष्ठिरलाल, पूर्व मंत्री चन्द्रशेखर साहू, ब्रिगेडियर विग्नेश सिंह, केन्द्रीय सुरक्षा बल के उप महानिरीक्षक संजय सिंह, महापौर एजाज ढेबर, निगम सभापति प्रमोद दुबे, पूर्व विधायक श्रीचन्द सुन्दरानी, क्षेत्रीय निदेशिका हेमलता दीदी, आशा दीदी, सविता दीदी सहित बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

मेडिटेशन के अभ्यास से मिलेगी हर पल खुशी

खुशियों का पासवर्ड विषय पर शिवादी दीदी ने किया मार्गदर्शन

शिव आमंत्रण, बिलासपुर (छग)।

ब्रह्माकुमारीज़ टिगरापारा सेवाकेंद्र की ओर से बहतराई स्टेडियम में खुशियों का पासवर्ड कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें अंतराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर बीके शिवानी दीदी ने कहा कि जिन खुशियों की तलाश में हम बाहर भटकते हैं, दरअसल वह हम आत्मा के निजी संस्कार हैं। हम अपने मूल स्वरूप आत्मा को भूल देह समझने से तेरे-मेरे के फेर में दूसरों को दुख का कारण समझ लेते हैं। सदा खुश रहने का मंत्र है मुझे क्या सोचना है यह मुझ पर निर्भर करता है। संकल्प से सृष्टि बनती है। अगर हमारे द्वारा सबके लिए दुआएं ही निकलें तो इस कलियुग को सतयुग बनते देर नहीं लगेगी। नहीं तो दोषारोपण, निंदा के चलते घोर कलियुग बन ही गया है।

जब अगली बार आऊं तो यह हाल खाली मिलना चाहिए। क्योंकि आज जो खुशियों का पासवर्ड मिला उसके बाद दुख का संस्कार खत्म हो जाना चाहिए। अगर खुशी का अनुभव गहराई से करना चाहते हैं तो कल से टिकरापारा, राजकिशोर नगर सेवाकेन्द्रों सहित निकट के किसी भी सेवाकेन्द्र में जाकर सात दिवस एक घंटा खुशी हर पल शिविर का लाभ जरूर लें। मंजू दीदी ने सभा को नशामुक्ति की शपथ दिलाई। एसपी संतोष सिंह, विधायक शैलेष पांडे, पूर्व मंत्री भ्राता अमर अग्रवाल ने शिवानी दीदी का स्वागत किया।

संकल्पों को सुंदर बनाने की कराई प्रतिज्ञा

शिव आमंत्रण, नई दिल्ली (आरकेपुरम)। मिनिस्ट्री ऑफ डिफेंस, रक्षा लेखा महानियंत्रक एवं ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वावधान में सीजीडीए ने आर्मी के ज़ोरावर ऑडिटोरियम, मानेकशॉ केंद्र में तनाव प्रबंधन एवं जीवन में समरसता विषय पर सत्र आयोजित किए। इसमें अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर बीके शिवानी दीदी ने सभी को मेडिटेशन का अभ्यास कराते हुए अपनी जीवन शैली को परिवर्तन करने में संकल्पों का महत्वपूर्ण योगदान बताया। सभी से संकल्पों को सुन्दर व सकारात्मक बनाने की प्रतिज्ञा कराई। संचालन सीनियर डिप्टी मुग्धा कौर जग्गी ने किया। विशेष प्रबंधन देविका रघुवंशी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में मिनिस्ट्री ऑफ़ डिफेंस दिल्ली के लगभग 15 कार्यालय के 800 से अधिक ऑफिसर्स व सदस्यों ने भाग लिया। आरकेपुरम सेवाकेंद्र की निदेशिका बीके अनिता दीदी को मोमेंटो व शाल से सम्मानित किया गया।

आपकी दृष्टि आपके जीवन को आकार देती है

शिव आमंत्रण, बिर्ले पार्ले, मुंबई।

ब्रह्माकुमारीज विले पार्ले वेस्ट ने लोटस आई हॉस्पिटल के साथ मिलकर मुकेश पटेल सभागार एनएमआईएमएस, जेवीपीडी, मुंबई में आध्यात्मिक वार्ता आयोजित की। इसमें अंतराराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर बीके शिवानी दीदी ने आपकी दृष्टि आपके जीवन को आकार देती है' विषय पर संबोधित करते हुए कहा कि अपनी दृष्टि को पवित्र, शुद्ध और आत्मिक बनाएं। लोटस आई हॉस्पिटल के अध्यक्ष एवं प्रबंध ट्रस्टी नवीन शाह ने स्वागत किया। कार्यक्रम में 500 से अधिक डॉक्टर, अस्पताल के ट्रस्टी और सम्मानित अतिथि उपस्थित थे। बीके योगिनी दीदी ने कहा कि राजयोग मेडिटेशन में जीवन की सारी समस्याएं का समाधान समाया हुआ है।

अपने श्रेष्ठ जीवन का विजन चित्र बनाएं

शिव आमंत्रण, भिलाई (छग)।

अपने श्रेष्ठ जीवन का विजन चित्र बनाएं और उसे जीवन में अप्लाई करें। परीक्षा के समय तैयारी नहीं परीक्षा के पहले तैयारी शुरू होती है, तो हमें भी जीवन में परेशानी आने से पहले मन को बहुत शक्तिशाली बनाना है। समय ना रुका है, ना रुकने वाला है। बल्कि और फास्ट गति से भागने वाला है।

यह बात अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर बीके शिवानी दीदी ने सेक्टर-7 स्थित बीएसपी सीनियर सेकंडरी स्कूल ग्राउंड में गॉड्स पावर मेरे पास विषय पर आयोजित कार्यक्रम में कही। उन्होंने कहा कि सुबह का समय मन में पॉजिटिव एनर्जी भरने का होता है। स्वयं के प्रति बहुत स्ट्रिक्ट रहना है। स्वयं को धोखा देना बंद कर दो।

इस दौरान विधायक देवेंद्र यादव, सांसद विजय बघेल, ईडी वर्क्स इस्पात संयंत्र के अंजनी कुमार, सीएसवीटीयू के वाइस चांसलर डॉ. एमके वर्मा, सेवाकेंद्र संचालिका बीके आशा दीदी, जोनल निदेशिका बीके हेमा दीदी ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। शिवानी दीदी को सुनने के लिए हजारों की संख्या में नगरवासी पहुंचे।

मैसूर में सकारात्मक परिवर्तन का वर्ष विषय पर सेमीनार आयोजित

शांति- खुशी के लिए आध्यात्मिकता का मार्ग दिखा रही हैं संस्थाः कुमार

शिव आमंत्रण, मैसूर।

इस प्रतिस्पर्धी दुनिया का सामना करना मुश्किल हो रहा है। कई लोगों ने शांति, आराम और खुशी खो दी है। हम उस स्तर पर पहुंच गए हैं जहां हमें खुशी और शांति खरीदनी है। उक्त उद्गार ओम शांति रिट्रीट सेंटर, दिल्ली की निदेशिका बीके आशा दीदी ने व्यक्त किए। मौका था ज्ञानप्रकाश भवन, यादवगिरी, मैसूरु में सकारात्मक परिवर्तन का वर्ष विषय पर आयोजित सेमीनार का।

उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ ने राजयोग के माध्यम से लोगों में जागरूकता लाने के लिए कई कार्यक्रम चलाए हैं, जिनमें से आज का कार्यक्रम भी एक है। लेकिन लोगों को ऐसे अवसरों का उपयोग करना होगा। मांड्या निर्वाचन क्षेत्र से विधानसभा सदस्य पी. रविकुमार ने कहा कि प्राचीन काल से भारत मन की शांति पाने के लिए योग और ध्यान की वकालत करता रहा है। मठों के साथ-साथ, ब्रह्माकुमारियों ने लोगों को मानसिक शांति और खुशी प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिकता का मार्ग दिखाया है। डॉ. शिपा अवारेबिल ने कहा कि चिकित्सा सेवाओं के क्षेत्र में होने के कारण वह मरीजों को देखने के साथ-साथ प्रतिदिन ध्यान का अभ्यास भी करती हैं और उसी मानसिकता के तहत मरीजों का इलाज करती हैं। भू-अभिलेख के संयुक्त निदेशक सी.एस.रमेश, सुत्तूर श्री शिवरात्रि देसी केंद्र स्वामी, बीके शरद, सबजोन की निदेशिका बीके लक्ष्मीजी ने भी विचार व्यक्त किए।

पत्रकारिता में आध्यात्मिकता के समावेश की आवश्यकता

शिव आमंत्रण, चक्रधरपुर (झारखंड)। ब्रह्माकुमारी पाठशाला में मीडिया विंग की ओर से 'पत्रकारिता में आध्यात्मिकता का समावेश की आवश्यकता' विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें हिंदुस्तान के सेल्स समन्वयक ओमप्रकाश सिंह, संवाददाता मुकेश कुमार मुकुल, खबर न्यूज ग्रुप के साजिद हुसैन, शुभम संदेश से शंभू साह ने संबोधित किया। बीके स्वरूप, बीके संगीता और बीके गीता ने संस्था और राजयोग के बारे में बताया।

बच्चों को जीवन में मूल्य धारण करने की दी शिक्षा

शिव आमंत्रण, खतौली (मुजफ्फरनगर)। सेवाकेंद्र की ओर से स्कूली बच्चों के आंतरिक सुंदरता, प्रभावी व्यक्तित्व, सकारात्मक सोच के विकास के लिए सेमीनार आयोजित किए गए। बीके तोशी बहन और बीके पूजा बहन ने बच्चों को सफलता के मंत्र बताए। इस मौके पर कुंद कुंद इंटर कॉलेज प्रिंसिपल अनुराग जैन का सम्मान किया। वहीं देवी मंदिर कन्या इंटर कॉलेज में आयोजित सेमीनार में प्राचार्य डॉ. कविता गुप्ता का सम्मान किया।

ब्रह्माकुमारीज़ के साथ कार्य करना गौरव की बात

शिव आमंत्रण, सारनाथ, बनारस/उप्र।

ब्रह्माकुमारीज़ के क्षेत्रीय कार्यालय ग्लोबल लाइट हाउस में नवनिर्वाचित महापौर एवं सारनाथ और आसपास के पार्षदों के लिए आध्यत्मिक स्नेह मिलन, स्वागत व पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि महापौर अशोक तिवारी ने कहा कि संस्था की विश्वव्यापी आध्यात्मिक और सामाजिक गतिविधियां अतुलनीय हैं। आज यहां आकर मैं खुद को धन्य महसूस कर रहा हूं। संस्था की क्षेत्रीय निदेशिका बीके सुरेंद्र दीदी ने कहा कि आध्यात्मिक मूल्य ही हमारी वास्तविक पहचान है। हम सामाजिक जीवन में आध्यात्मिकता के समावेश द्वारा मानव के जीवन स्तर को ऊंचा उठाकर मूल्यनिष्ठ समाज की परिकल्पना को साकार कर सकते हैं। क्षेत्रीय प्रबंधक ब्र.कु. दीपेंद्र ने कहा कि संस्था जाति, धर्म, भाषा, सम्प्रदाय आदि की सीमा से ऊपर ऊठकर विश्व को आपसी एकता के सूत्र में पिरोने का कार्य कर रही है।

सारनाथ पार्षद अभय कुमार पाण्डेय, पत्रकार प्रेस परिषद के जिलाध्यक्ष पवन पाण्डेय, आशापुर की पार्षद उर्मिला पाण्डेय, अकथा पार्षद राजेंद्र मौर्या, पार्षद ज्ञानचंद पटेल, पूर्व प्रधान नागेश्वर मिश्र, समाजसेवी ओएन उपाध्याय, होली सिटी हास्पिटल के डायरेक्टर डॉ. केपी जायसवाल मुख्य रूप से मौजूद रहे। संचालन बीके तापोशी दीदी ने किया। आभार बीके विपिन ने माना।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, खंडवा (मप्र)। विश्व कल्याण में अपना जीवन अर्पण करने वाली जिले की 6 बेटियों का भाग्योदय भवन मुख्य सेवाकेंद्र पर सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इसमें संचालिका ब्रह्माकुमारी शक्ति दीदी की उपस्थिति में सभी बेटियों ने परमपिता परमात्मा शिव को जीवन साथी के रूप में चुनकर ईश्वरीय नियमों की प्रतिज्ञा ली। जिले की पिंकी बहन, सरस्वती बहन, किरण बहन, जमना बहन, आरती बहन, कृष्णा बहन ने परिवारजन की उपस्थिति में तप के मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। भाई-बहनों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दीं।

शिव आमंत्रण, राजगढ़/मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र में गुरु पूर्णिमा कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें इसमें रिटायर्ड स्टेनोग्राफर मूलचंद चक्रवर्ती, अंजनी लाल मंदिर के संरक्षक प्रताप सिंह सिसोदिया, बमबम आश्रम से महंत गोदावरी पुरी, गीता मानस प्रचार समिति के महासचिव अशोक शर्मा, ब्र.कु. सीमा, ब्र.कु.कविता एवं ब्र. कु. सुमित्रा ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

शिव आमंत्रण, रतलाम (मप्र)। डोंगरे नगर स्थित दिव्य दर्शन भवन के नवनिर्मित अनुभूति सभागृह का उद्घाटन माउंट आबू से पधारे राजयोगी सूर्य भाई, इंदौर जोन की क्षेत्रीय निदेशिका बीके हेमलता दीदी, भिलाई क्षेत्र की संचालिका बीके आशा दीदी, उज्जैन क्षेत्र की संचालिका बीके उषा दीदी, महापौर प्रहलाद पटेल, उद्योगपति अनोखीलाल कटारिया, बीके जयंती दीदी, बीके अनिता दीदी मुख्य रूप से मौजूद रहीं।

शिव आमंत्रण, मुंबई। इंटरनेशनल इंडियन फिल्म एंड टेलीविजन अवॉर्ड्स आईफा समारोह अंधेरी स्थित थे क्लब के हॉल में आयोजित किया गया। इसमें भीनमाल की बीके गीता बहन ने प्रकृति संरक्षण का संदेश दिया। मुख्य अतिथि के रूप में मुंबई हाई कोर्ट की क्रिमिनल लॉयर स्नेहा सिंह मौजूद रहीं। समारोह में फिल्म और टीवी जगत की अनेक हस्तियों ने भाग लिया। इसमें विशेष रूप से रहिम देसाई, दीप्ति सैनी (मिसेज इंडिया इंटरनेशनल 2018) करणवीर बोहरा, जीशन खान, अरुण पुरी, अभिनंदन सिंह आदि उपस्थित थे।

शिव आमंत्रण, सदस्यता हेतु संपर्क करें-
वार्षिक मूल्य 150 रुपए तीन वर्ष 450 रुपए
आजीवन 3500 रुपए
मो 9414172596, 8521095678
Website www.shivamantran.com

पत्र व्यवहार का पता
संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 8538970910, 9179018078
Email shivamantran@bkivv.org

For online transfer
A/C Name: Rajyoga Education & Research Foundation
A/C Number: 35401958118, IFSC Code: SBIN0010638
Bank & Branch: State Bank Of India, PBKIVV, Shantivan, Abu Road, Rajasthan
Note: On transfer please email details to: shivamantran.acct@bkivv.org, Helpline: 6377090960
Scan To Pay

जयपुर आगमन पर राष्ट्रपति से की मुलाकात

शिव आमंत्रण, जयपुर। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के जयपुर आगमन पर बीके भाई-बहनों ने भेंट कर स्वागत किया। ब्रह्माकुमारीज़ पीस पैलेस की प्रभारी बीके हेमलता बहन के नेतृत्व में वरिष्ठ राजयोगी एवं उद्योगपति मदनलाल शर्मा, बीके कविता बहन व अन्य बीके भाइयों राष्ट्रपति से मुलाकात की। इस दौरान बीके हेमलता बहन ने पीस पैलेस द्वारा की जा रहीं सामाजिक सेवाओं के बारे में राष्ट्रपति को अवगत कराया।

राष्ट्रपति को सेवाओं के बारे में बताया

शिव आमंत्रण, भोपाल। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु के भोपाल आगमन पर ब्रह्माकुमारीज़ सुख-शांति भवन नीलबड़ की प्रभारी बीके नीता दीदी के नेतृत्व में बीके आराधना बहन, बीके हेमा बहन, बीके साक्षी बहन, बीके रामकुमार, बीके डॉ. संजीव, बीके डॉ. दिलीप ने भेंट की। इस दौरान उन्हें भोपाल में चल रही नशा मुक्त भारत अभियान, जल जन अभियान, पर्यावरण संरक्षण अभियान, दिव्यांगजन सशक्तिकरण अभियान की सेवाओं की जानकारी दी।

झारखंड के राज्यपाल को बांधी राखी

शिव आमंत्रण, रांची (झारखंड)। ब्रह्माकुमारीज की संचालिका बीके निर्मला दीदी ने झारखंड के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन से मुलाकात कर राखी बांधी। साथ ही उन्हें संस्थान द्वारा की जा रही सेवाओं के बारे में रुबरु कराया। इसके अलावा राज्यपाल के प्रधान सचिव निर्मला नितिन कुलकर्णी, एडीसी गवर्नर नवीन कुमार को भी परमात्म रक्षासूत्र बांधकर राजयोग मेडिटेशन के बारे में बताया।

वाशिम जेल में कैदियों को कराया मेडिटेशन

शिव आमंत्रण, वाशिम (महाराष्ट्र)। जिला कारागृह में बंदी, कैदियों के लिए वर्कशॉप आयोजित की गई। इसमें माउंट आबू से आए बीके भगवान भाई ने अपराधमुक्त जीवन, कर्म, गति और व्यवहार शुद्धि विषय पर संबोधित करते हुए कहा कि जेल को सुधारगृह समझकर चलें। यहां से जीवन में श्रेष्ठ कर्म करने का संकल्प लेकर जाएं। इस दौरान जेल अधीक्षक प्रदीप इंगले, रिटायर जेल अधीक्षक बीके रामकृष्ण, बीके पार्वती बहन भी मौजूद रहीं।

रेडियो मधुबन की टीम ने बच्चों को किया जागरूक

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)।

एम्स जोधपुर द्वारा आबू रोड के आसपास के आदिवासी गांवों, स्कूल में स्वास्थ्य संबंधी जानकारी देने के लिए शिविर आयोजित किए गए। विश्व आदिवासी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में रेडियो मधुबन की टीम को भी विशेष तौर पर आमंत्रित किया गया।
इस दौरान आरजी बीके आरुषी ने बच्चों को तम्बाकू खाने के नुकसान, स्वच्छ जीवनशैली और बीमारियों से बचने के लिए जानकारी दी। साथ ही एक्टीविटीज के माध्यम से बच्चों को सही तरीके से हाथ धोना सिखाया। खेल प्रतियोगिता के दौरान बच्चों एवं शिक्षकों से बात की। अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी मनोहर ने बच्चों से कहा कि इन जानकारी का उपयोग अपने जीवन में करें।
इस दौरान एम्स के एकेडमिक डीन डॉ. कुलदीप सिंह ने बच्चों को शिक्षित करने के साथ ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग को अपनाकर स्वस्थ रहने का सन्देश दिया। साइंटिस्ट डॉ. राखी ने कहा कि सामुदायिक रेडियो स्टेशन रेडियो मधुबन ग्रामीणों को जागरूक करने में अहम भूमिका निभा रहा है। आज इसे गांवों में सभी वर्ग के लोग सुनते हैं। उन्हें खेती-किसानी से लेकर शिक्षा और स्वास्थ्य की अहम जानकारी रेडियो के माध्यम से मिलती है। लोगों में सकारात्मक अलख जगाने में रेडियो की महत्वपूर्ण भूमिका है।

स्वर्णिम समाज की स्थापना में नैतिक मूल्यों का सर्वाधिक महत्व

शिव आमंत्रण, छतरपुर (मप्र)।

यही भारत देवभूमि, स्वर्णिम भारत, विश्व गुरु कहलाता था। जिसमें हर भारतवासी देवता कहलाते थे। लेकिन क्या कोई आज अपने को देवता कहला सकते हैं? नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण आज भी हम देवी-देवताओं की महिमा में गाते हैं संपूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम और हम सभी चाहते भी हैं कि एक ऐसा समाज हो जहां एक धर्म, एक भाषा, एक राष्ट्र हो। जैसा संकल्प, वैसी सृष्टि। समय की मांग है परिवर्तन। परिवर्तन की शुरुआत पहले स्वयं से करनी है, क्योंकि हमारे जीवन में जब नैतिक मूल्यों का समावेश होगा, तभी हम एक सभ्य समाज, सुंदर राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं । उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ लवकुशनगर द्वारा समाज सेवा प्रभाग के अंतर्गत सकारात्मक परिवर्तन का वर्ष विषय पर आयोजित कार्यक्रम में छतरपुर प्रभारी बीके शैलजा बहन ने व्यक्त किए। इस दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला संघ संचालक डॉ. नारायण सिंह, नगर संचालक मनोज चतुर्वेदी, सभी कार्यकर्ता, बजरंग दल के जिला मंत्री योगेंद्र सिंह, गौसेवा समिति अध्यक्ष शिवपूजन अवस्थी, जन परिषद अभियान अध्यक्ष अनिल निगम, सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सुलेखा बहन मुख्य रूप से मौजूद रहीं।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, सोनीपत (हरियाणा)। मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर के आगमन पर सेक्टर-15 की प्रभारी बीके प्रमोद दीदी ने दीनबंधु छोटूराम यूनिवर्सिटी में मुख्यमंत्री का स्वागत किया। साथ ही संस्थान द्वारा की जा रही सामाजिक सेवाओं के बारे में मुख्यमंत्री को बताया।

शिव आमंत्रण, रांची। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को ब्रह्माकुमारी निर्मला दीदी ने परमात्म रक्षासूत्र बांध कर उन्हें संस्थान द्वारा की जा रही सामाजिक व आध्यात्मिक सेवाओं के बारे में बताया। साथ ही मुख्यालय में होने वाली ग्लोबल समिट का निमंत्रण दिया। बीके प्रदीप, बीके इंदु बहन भी मौजूद रहीं।

शिव आमंत्रण, दिल्ली। भारत के केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग राज्य मंत्री विजय कुमार सिंह से मुलाकात कर बीके सुनीता दीदी, ओआरसी की बीके येशु बहन ने माउंट आबू के लिए आमंत्रित किया।

शिव आमंत्रण, टोंक (राज.)। राजयोग भवन सेवाकेंद्र पर मीडिया प्रभाग की ओर से सकारात्मक परिवर्तन के लिए जागरूक मीडिया विषय पर सेमिनार एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में माउंट आबू से पधारे प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक बीके शांतनु भाई, नेहरू युवा केंद्र के जिला युवा अधिकारी हितेश कुमार, सेवाकेंद्र प्रभारी बीके अपर्णा दीदी, बीके ऋतु दीदी ने विचार व्यक्त किए। इस दौरान बीके बीना दीदी, बीके निर्मल दीदी, बीके पूनम दीदी, बीके अनीता दीदी, बीके रेखा दीदी, बीके सुनीता दीदी, बीके शोभा दीदी, बीके पांचू भाई व भाई-बहन मौजूद थे।

शिव आमंत्रण, गुलबर्गा। ब्रह्माकुमारीज़ के अमृत सरोवर रिट्रीट सेंटर में आयोजित कार्यक्रम में राजयोगी बीके प्रेम भाई को डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया है। यह उपाधि सेंट्रल यूनिवर्सिटी, गुलबर्गा के कुलपति प्रोफेसर बी. सत्यनारायण ने प्रदान की। इस मौके पर मानव अधिकार संघ, नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रोफेसर मिलिंद प्रहलाद, राजयोगिनी बीके विजया दीदी, बीके शिवलीला दीदी सहित बड़ी संख्या में बीके भाई-बहन मौजूद रहे।

यौगिक खेती की सिखाईं बारीकियां

बीके भाई-बहनों के लिए तीन दिवसीय यौगिक खेती प्रशिक्षण आयोजित

शिव आमंत्रण, सोनीपत (हरियाणा)

सोनीपत रिट्रीट सेंटर में बीके टीचर बहनों के लिए तीन दिवसीय शाश्वत यौगिक खेती प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इसमें पूरे भारतवर्ष से टीचर बहनों ने भाग लिया।

इसमें नेशनल को-ऑर्डिनेटर बीके तृप्ति बहन ने कहा कि भारत कृषि और ऋषि प्रधान देश है और हमें उसी कृषि को रासायनिक खाद की जगह यौगिक खेती के प्रयास से और बेहतर बनाना है। बीके बद्री विशाल तिवारी भाई ने अन्न और मन की शुद्धि पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि प्रकृति और पुरुष दोनों जब सतोप्रधान बनेंगे, तब ही स्वर्णिम दुनिया स्थापन हो सकेगी। कोर्डिनेटर विजय दीदी ने कहा कि प्रकृति हमारी माता-पिता है और उसकी पालना करने वाला किसान है, जिनकी आंतरिक जाग्रति द्वारा मनुष्य जीवन को शक्तिशाली और गुणवान बनाया जा सकता है। मुख्यालय संयोजक बीके सुमन्त भाई ने कहा की अन्न का सात्विक परिवर्तन ही संसार परिवर्तन का आधार है। बीके बाला साहेब भाई ने कहा कि किसान ऐसे डॉक्टर बनते हैं जिनकी खेती से अनेक लोगों की बीमारियां ठीक हो सकती हैं। बीके शीला बहन ने कहा कि पेड़-पौधे भी हमसे ख़ुशी और प्यार की चाहना रखते हैं इसलिए हमें उनकी बच्चों की तरह पालना करनी चाहिए। डायरेक्टर बीके भारत भूषण ने भी अपने विचार रखे।

ब्रह्माकुमारी बहनों ने लिया यौगिक खेती का प्रशिक्षण

शिव आमंत्रण, महेसाणा (गुजरात)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र द्वारा गोडली पैलेस में तीन दिवसीय शाश्वत यौगिक खेती राष्ट्रीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इसमें देशभर से बीके बहनों ने भाग लिया। शुभारंभ पर आत्मा प्रोजेक्ट के डायरेक्टर भरत भाई पटेल, कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्ष एवं ब्रह्माकुमारीज़ के महेसाना उपक्षेत्र के संचालिका बीके सरला दीदी, उपाध्यक्ष राजयोगी राजू भाई, गुजरात ज़ोन संयोजक बीके सुरेखा बहन, कार्यकारी सदस्य बीके राजेश दवे, बीके जयश्री बहन, बीके मनीषा बहन ने किया।

पुणे में आईटी प्रोफेशनल के लिए कार्यशाला आयोजित

शिव आमंत्रण, पुणे, महाराष्ट्र

जगदम्बा भवन में ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े आईटी क्षेत्र में काम करने वाले भाई-बहनों के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इसमें आईटी एक्सपर्ट ब्रह्माकुमार बाला किशोर भाई ने पॉवर ऑफ सबकॉन्सियश माइंड विषय पर संबोधित करते हुए कहा कि स्मृति से वृत्ति, वृत्ति से दृष्टि, दृष्टि से कृति और कृति से सृष्टि बदलती है। यह एक प्रक्रिया है।

बीके प्रकाश भाई ने आत्मा के गुणों को हम कार्यक्षेत्र पर कैसे अमल में लाएं के बारे में बताया। इसके लिए विभिन्न एक्टिविटीज के जरिये प्रतिभागियों के साथ सांझा किया। ज्ञान सरोवर से पधारे ब्रह्माकुमार डेविड भाई ने अपने निजी अनुभव और संगीत के माध्यम से सभी श्रोताओं को प्रेरित किया। संचालन ब्रह्माकुमारी निक्की बहन ने किया। पुणे के विभिन्न स्थानों से आए करीब 100 आईटी प्रोफेशनल्स ने लाभ लिया।

मेडिटेशन से कराई शांति की अनुभूति

शिव आमंत्रण, मोकामा (बिहार)। रेलवे सुरक्षा बल प्रशिक्षण केन्द्र मोकामाघाट में विभिन्न डिविजन से आए उप निरीक्षक, सहायक उप निरीक्षक, प्रआ एवं आरक्षक को परपज ऑफ लाइफ कार्यक्रम के तहत बीके निशा बहन तथा बीके नमन भाई ने जीवन के मूल उद्देश्यों से अवगत कराया। राजयोग मेडिटेशन से शांति की अनुभूति कराई।

पन्ना की बीके सीता का किया सम्मान

शिव आमंत्रण, पन्ना (मप्र)। ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाकेंद्र संचालिका राजयोगिनी बीके सीता बहन का शॉल ओढ़ाकर और स्मृति चिंह्न देकर सम्मान किया गया। यह सम्मान मीना राजे अध्यक्ष जिला पंचायत, विजया राजे जिला उपाध्यक्ष, भाजपा महिला मोर्चा की गौरी अरजरिया मुख्य रूप से मौजूद रहीं।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, बैतूल (मप्र)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र भाग्य विधाता भवन की ओर से संचालिका ब्रह्माकुमारी मंजू के नेतृत्व में शहर में 12 ज्योतिर्लिंग की रथ यात्रा निकाली गई। इसका जगह-जगह जोरदार स्वागत किया गया। इसके माध्यम से परमपिता शिव परमात्मा के अवतरण का संदेश दिया।

शिव आमंत्रण, अटलादरा बड़ौदा (गुजरात)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र की ओर से पुलिसकर्मियों के लिए तीन-तीन दिन के राजयोग सत्र आयोजित किए गए। संचालिका बीके अरुणा बहन और सह संचालिका बीके पूनम बहन ने राजयोग के बारे में बताया। कमिश्नर डॉ. शमशेर सिंह, जॉइंट कमिश्नर मनोज निनामा, डीसीपी यशपाल, एसीपी कमलेश वसावा मुख्य रूप से मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, शिवहर (बिहार)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र की ओर से नगर परिषद के नवगठित सभापति एवं पार्षदों का अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। इसमें सेवाकेंद्र संचालिका बीके भारती बहन, माउंट आबू से बीके प्रेम, सभापति राजन नंदन सिंह, उपसभापति सुनील कुमार एवं पार्षदगण मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, गया (बिहार)। सिविल लाइंस गांधी मैदान में ब्रह्माकुमारीज़ के 12 ज्योतिर्लिंगम मेला का उद्घाटन करते हुए महापौर वीरेंद्र कुमार, जिला परिषद अध्यक्ष नैना देवी, सीडीपीओ अरुणा कुमारी, बोधगया पूर्व विधायक श्यामदेव पासवान, बौद्ध भिक्षु प्रज्ञादीप, समाजसेवी कैलाश डालमिया, डॉ. बीरेंद्र प्रसाद, ईटी एच संपादक मदन मोहन मिश्र, व्यवसायी प्रदीप जैन, राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी शीला दीदी। मेले में आकर हजारों लोगों ने ईश्वरीय संदेश प्राप्त किया।

शिव आमंत्रण, जालंधर (पंजाब)। आदर्श नगर स्थित ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर महिला डॉक्टर्स के लिए इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के वुमन डॉक्टर्स विंग के सहयोग से 'वर्क-लाइफ बैलेंस' विषय पर वर्कशॉप का आयोजन किया गया। मुख्य प्रवक्ता बीके डॉ. राधिका ने बताया कि जीवन है तो कर्म तो करना ही है लेकिन जब कर्म सही उद्देश्य, सही तरीके और सही भाव से किया जाए, वही जीवन में संतुष्टता और बैलेंस लाता है। बीके डॉ. प्रोतिमा बजाज, बीके डॉ. मनमीत कौर सोढ़ी, बीके डॉ. निशा गांधी ने भी अपने अनुभव सांझा किए। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके संधिरा बहन ने राजयोग ध्यान के बारे में बताया।

विद्यालय विश्व शांति और कल्याण के लिए सराहनीय कार्य कर रहा

श्रीनगर गढ़वाल में अयोध्या के संतों का सम्मान समारोह आयोजित

शिव आमंत्रण, श्रीनगर(उत्तराखंड)।

ब्रह्माकुमारीज़ के श्रीनगर गढ़वाल सेवाकेंद्र पर श्रीराम जन्मभूमि अयोध्या से विभिन्न पीठों से पहुंचे पांच महंतों एवं 70 ब्रह्मचारियों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में अयोध्या नगरी से राजा दशरथ चक्रवर्ती राज महल के महंत देवेंद्रप्रसादाचार्य महाराज (बड़े सरकार) ने कहा कि विश्व शांति एवं मानव जगत में विश्व कल्याण की अलख जगाने के लिए जो काम ईश्वरीय विवि द्वारा किया जा रहा है, वह सराहनीय है।

रामजन्म भूमि निर्माण न्यास के पूर्व अध्यक्ष एवं भारत साधु समाज के महामंत्री महंत जन्मेजयशरण महाराज ने कहा कि ईश्वरीय शक्ति मिलना मानव के लिए बड़ी बात है। ईश्वरीय शक्ति अदृश्य होकर भी मिलती है। विवि के भाई-बहनों के त्याग और तपस्या का परिणाम है कि लोग आज ईश्वरीय शक्ति की खोज में आगे आ रहे हैं। जगतगुरु श्री रामदिनेशाचार्य ने वेद-गीता के मूल तत्वों से अवगत कराते हुए कहा कि जीवन में त्याग होगा तभी शांति होगी। त्याग-तपस्या ही शांति का प्रतीक है। महंत अवधेश दास महाराज ने कहा कि उत्तराखंड देवभूमि है और यूपी के सीएम भी देवभूमि से हैं। महंत नागा रामलखन दास ने भी अपने विचार रखे। माउंट आबू से पधारे धार्मिक प्रभाग के कोऑर्डिनेटर बीके रामनाथ भाई, बीके मेहरचंद भाई, दिल्ली से बीके राजेश्वरी दीदी, बीके उषा दीदी, बीके सरिता दीदी, बीके नीलम दीदी, बीके मुकेश भाई ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

मूल्यनिष्ठ समाज के लिए महिला सशक्तिकरण सम्मेलन आयोजित

शिव आमंत्रण, बड़ोदरा| भारत सरकार के आईसीडीएस प्रोजेक्ट अंतर्गत पूरे गुजरात राज्य में चल रहे नारी वंदना सप्ताह के तहत आंगनवाड़ी की 700 बहनों के लिए 'मूल्यनिष्ठ समाज के लिए महिला आध्यात्मिक सशक्तिकरण' विषय पर अटलादरा सेवाकेंद्र में नारीशक्ति महासम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें म्यूनिसिपल कमिश्नर दिलीपभाई राणा, डेप्युटी म्यूनिसिपल कमिश्नर अर्पित सागर, सेवाकेंद्र संचालिका ब्रह्माकुमारी अरुणा दीदी, सह संचालिका बीके पूनम दीदी,

प्रोग्राम ऑफिसर अंबिका बहन, दिलीप भाई शाह, योगाचार्य दुष्यंत भाई मोदी, नैना बहन और काशी विश्वनाथ मंदिर के ट्रस्टी अरविंद भाई पंचाल मौजूद रहे। उपस्थित रहे। शहर की सक्रिय 438 आंगनवाड़ी कार्यकर्ता को राजयोग के बारे में बताया गया।

वार्षिक उत्सव में पहुंचे 1500 बीके भाई-बहनें

शिव आमंत्रण, पानीपत।

ज्ञान मानसरोवर रिट्रीट सेंटर में पानीपत सर्कल की ब्रह्माकुमारीज़ पाठशालाओं का वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया। इसमें पाठशाला चलाने के निमित्त भाई-बहनों का सम्मान किया गया। उत्सव में लगभग 1500 से अधिक भाई-बहनों ने भाग लिया।

दिल्ली से आईं मुख्य वक्ता जूरिस्ट विंग की चेयरपर्सन राजयोगिनी पुष्पा दीदी ने कहा कि महान व्यक्ति वही है जो स्वयं भी ईश्वरीय ज्ञान को जीवन में धारण करता है एवं दूसरों का भी जीवन बनाने में सहयोग देता है। वह घर मंदिर के समान जिस घर में ईश्वरीय ज्ञान की क्लास चलती है। ज्ञान मानसरोवर के निदेशक बीके भारत भूषण ने कहा कि पानीपत सब जोन में 400 से ज्यादा ब्रह्माकुमारीज़ पाठशालाएं हैं जहां आकर अनेकों लोगों का जीवन परिवर्तन हुआ है। सैकड़ों परिवार निर्विकारी और निर्व्यसनी जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

सिटी मजिस्ट्रेट राजेश सोनी ने कहा कि ज्ञान की अच्छी बातें हमें जहां से भी मिले ग्रहण करनी चाहिए। सर्कल इंचार्ज बीके सरला दीदी, बिजनौर सेवाकेंद्र से बीके सुरेश बहन, बीके शिवानी बहन ने भी विचार व्यक्त किए।

नई राहें

बीके पुष्पेंद्र, संयुक्त संपादक
शिव आमंत्रण, शांतिवन

हम कब बनेंगे विघ्न विनाशक...?

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। सदियों से हम विघ्न विनाशक गणेशजी की आराधना करते आ रहे हैं। हर वर्ष बड़े उमंग-उत्साह के साथ स्थापना करते हैं और दस दिन पूजन-अर्चन के बाद विसर्जित कर देते हैं। सवाल ये है कि बचपन से जीवन की सांझ आ गई लेकिन गणेशजी के जीवन से सीखा क्या है? क्या किसी एक दिव्यगुण को भी आत्मसात किया है? क्या जीवन को उनके समान मंगलकारी बनाने की ओर कदम बढ़ाया है? क्या खुद के विघ्नों के हम खुद विघ्न विनाशक बने हैं? या फिर जीवन की समस्याओं में आज भी रस्सी की तरह उलझा और असहाय महसूस करते हैं? क्या जीवन समावेशी दृष्टिकोण धारण किया है? क्या मन-वचन-कर्म से दूसरों के लिए मंगलकारी बने हैं या अमंगल के कारण बने हुए हैं?

बचपन से सामाजिक रूप से कुछ दृश्य देखते, सुनते हमारी मनोदशा ही कुछ ऐसी हो गई है कि हम खुद को दीन-हीन, मूरख, खलकामी मान बैठे हैं। हम खुद गाते हैं कि देवा विषय-विकार मिटाओ और जब देवा विषय-विकार मिटाने के लिए परम ज्ञान बताते हैं तो यह मानकर छोड़ देते हैं कि यह हमारे वश की बात नहीं है। ज्ञान-ध्यान तो साधु-सन्यासियों का काम है। ईश्वर को पाना, उससे प्रेम करना तो महात्माओं का काम है। साथ ही पूरा जीवन चमत्कार की आस में बिता देते हैं कि आसमान से कोई फरिश्ता आएगा और एकपल में सारे दुख दूर कर देगा। यदि चमत्कार ही जीवन का सत्य है तो कर्म, फल और पुरुषार्थ का कोई औचित्य नहीं रह जाता है?

गीता ज्ञान यही कहता है कि जीवन को सिर्फ स्व के श्रेष्ठ पुरुषार्थ, महान कर्म, ज्ञान बल, योग बल और परमात्म शक्ति के संयोजन से ही विघ्न विनाशक बना बनाया जा सकता है। जीवन के विघ्न हमें खुद अपने पुरुषार्थ से दूर करना होंगे। ज्ञान के सागर परमात्मा हमें सतधर्म, सत् मार्ग का रास्ता बताते हैं, उस पर चलना या नहीं चलना हमारे ऊपर है। विघ्न और मंगलकारी अवस्था सिर्फ इस बात पर निर्भर करती है कि हमारी मनोदशा क्या है। मनोदशा को मनोहारी, मंगलकारी बनाना हमारे ही हाथ में है।

व्यक्तित्व को निखारने क्षमताओं को करना होगा विकसित-

गणेशजी की बड़ी सूंड सिखाती है कि जीवन में अपनी क्षमताओं को विकसित करते रहें, उन्हें बढ़ाते हैं। अपने व्यक्तित्व को पल-प्रतिपल निखारने और संवारते रहें। क्षमतावान व्यक्ति जीवन के हर क्षेत्र में मान-सम्मान पाता है। बड़े कान संदेश देते हैं कि ज्ञान की बातों को ध्यान से, जिज्ञासा भरे भाव और पूरे चित्त के साथ सुनें, समझें। उनका चिंतन-मनन और अध्ययन करें। ताकि विषम परिस्थितियों में उन महावाक्यों, ज्ञान के सहारे मन को शांत रख सकें, समस्याओं से आसानी से पार पा सकें। ज्ञानी व्यक्ति बोलने से ज्यादा सुनता है। इस गुण के कारण व्यक्तित्व में चार चांद लग जाते हैं।

दूरदर्शी हो दृष्टिकोण, ताकि परिणाम न करें विचलित-

छोटी आंखें संदेश देती हैं कि जीवन में कोई भी कर्म करने के पहले दूरदर्शी दृष्टिकोण हो, वर्तमान, भविष्य और भूत को ध्यान में रखकर निर्णय लिया जाए, ताकि कर्म का परिणाम मन-बुद्धि को विचलित न करे। साथ ही छोटे से छोटे व्यक्ति में गुण देखना। गणेशजी का बड़ा पेट सिखाता है कि समाने की शक्ति का कितना महत्व है। कई बार हम बेवजह की झंझटों, परेशानियों और समस्याओं में इसलिए फंस जाते हैं क्योंकि हमारे पास समाने की शक्ति का अभाव है। आपसी व पारिवारिक रिश्तों की नींव है एक-दूसरे की कमी-कमजोरियों को समां लेना, उन्हें नजरअंदाज कर देना।

संस्कारों को बदलने के लिए जड़ पर करना होगा प्रहार-

चार हाथ में से एक हाथ में कुल्हाड़ी दिखाते हैं जो संदेश देती है कि यदि कड़े संस्कारों, पुरानी आदतों को बदलना है तो उन पर तेज प्रहार करना होगा, उसे जड़ से उखाड़कर फेंकना होगा। तभी समस्या का अंत होगा। एक हाथ हमेशा वरद मुद्रा में दिखाया गया है जो संदेश देता है कि जीवन में सदा देने का भाव रखें। हम किसी को खुशी देंगे तो बदले में खुशी मिलेगी। दुआ देंगे तो दुआ मिलेगी। देवताओं में देने का भाव होता है इसलिए वह पूजनीय होते हैं। रस्सी बंधन का प्रतीक है जो बताती है कि सबसे पवित्र बंधन है आत्मा का परमात्मा के साथ का बंधन। परमात्मा से प्रेम का बंधन। परमात्मा के प्यार में बंधने के बाद सारे बंधन अपने आप छूट जाते हैं। मोदक खुशी का प्रतीक है। जब खुशी का मौका होता है तो हम एक-दूसरे को लड्डू खिलाकर मुख मीठा कराते हैं। ऐसे ही अपनी वाणी सदा मिठास से भरपूर हो। गणेशजी को मूसक की सवारी दिखाते हैं मतलब जीवन में कितने ही आगे बढ़ जाएं, कितनी ही तरक्की कर लें, लेकिन सदा जमीन से जुड़े रहें। अपनी मूल जड़ों और संस्कारों से जुड़े रहें। अपने से छोटों को भी पूरा सम्मान दें।

...फिर जीवन में होगा मंगल ही मंगल, एक संकल्प स्व के परिवर्तन का-

क्यों न इस बार गणेश चतुर्थी पर हम एक संकल्प परिवर्तन का करते हैं। गजानन महाराज के जीवन के दिव्यगुणों में से एक दिव्य गुण को आत्मसात करते हैं। उसे जीवन में शिरोधार्य कर उसका स्वरूप बनते हैं। हम अपने विघ्न विनाशक खुद बनते हैं। महान परिवर्तन की ओर पहला कदम बढ़ाने का आज संकल्प रखते हैं। खुद को विषय-विकारी, मूरख, खलकामी की मनोदशा से निकालकर परमात्मा के दिलतख्तनशीन, कुलदीपक, आशा के दीपक, महान आत्मा, दिव्य आत्मा, श्रेष्ठ आत्मा बनने का संकल्प लेकर उनके बच्चे बनने का परम सौभाग्य प्राप्त करते हैं। फिर हमारे जीवन में मंगल ही मंगल होगा और दूसरों के लिए भी मंगलकारी बन जाएंगे। वर्तमान परिवर्तन के इस दौर में यही परमात्म आज्ञा और शिक्षा है।

जीवन प्रबंधन

राजयोगिनी बीके शिवानी दीदी,
अंतरराष्ट्रीय प्रेरक वक्ता,
गुरुग्राम, हरियाणा

सहनशीलता आपसी रिश्तों की नींव और आधार

टोलरेंस पॉवर से सुधरेंगे आपसी रिश्ते

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

भाइयों की जिंदगी का आधे से ज्यादा समय ऑफिस या कारोबार में जाता है। ऐसे में हमारे वर्कप्लेस पर कलीग्स के साथ रिश्ते कैसे हैं यह बहुत मायने रखता है। कई बार हम सही होते हैं लेकिन मिस कम्युनिकेशन के कारण गलतफहमी हो जाती हैं। जो रिश्ते पहले लॉफुल और लवफुल थे उनमें अब दूरियां आ गई हैं। ऐसे सिचुएशन में जरूरी है कि हम आपसी रिश्तों की गहराई में जाएं। उन बातों के बारे में जानने की कोशिश करें जहां से हमारे रिलेशन में दूरियां आईं थीं। जब आप एकांत में, शांत मन से सोचेंगे तो खुद ही समाधान पर पहुंच जाएंगे कि हमारे अमुख बात और बिहेवियर के कारण गलतफहमियां पैदा हो गईं। रिश्तों में मजबूती, आपसी प्रेम के लिए सबसे जरूरी है पेशंस, धैर्य होना। सहनशील होना। आज टोलरेंस पावर (सहनशीलता की शक्ति) नहीं होने से रिश्ते टूट रहे हैं। घर-परिवार हो या ऑफिस, सब जगह आपसी रिश्ते बिगड़ने का मुख्य कारण ही है टोलरेंस पॉवर की कमी। टोलरेंस पावर ही आपसी रिश्तों की नींव और आधार है।

जब तक हम खुद न चाहें कोई हमें हर्ट नहीं कर सकता : हम देखते हैं जो लोग आपसे वह व्यवहार कर रहे हैं जो आपको पसंद नहीं है उनके पास भी उतने ही पावर हैं। वो क्या कर सकते हैं वो अपने अनुसार जो वे सही समझते हैं बोल सकते हैं। वो झूठ बोल सकते हैं, धोखा दे सकते हैं, गलत व्यवहार कर सकते हैं, चिल्ला सकते हैं, रो सकते हैं वह सबकुछ कर सकते हैं। लेकिन वो हमारे माइंड के अंदर नहीं घुस सकते हैं। लेकिन हम कहते हैं कि उन्होंने हमें हर्ट किया, इनसल्ट किया। उन्होंने मुझे अनादर, अपमान किया। यह तो हमारी भाषा है, वो तो ऐसा कुछ भी नहीं कर सकते, वो तो वहां सिर्फ खड़े होकर बोल कर सकते हैं। अब उसके पास आपकी च्वाइस है। उन्हों को लेना है या नहीं लेना है। अब लेना है तो कितना लेना है। और लेकर उसके बारे में कितना रोना है और रोना है तो फिर कब तक रोना है। बातों को पकड़कर रखना है तो कब तक पकड़कर रखना है। छोड़ना है तो कब तक छोड़ना है। नहीं छोड़ना है तो जब शरीर छोड़ेंगे तब भी साथ में लेकर जाएंगे। ये सारे पावर किसके पास हैं। ये पावर हमारे पास है लेकिन हम अपने पावर को यूज नहीं करते हैं। क्योंकि हम ब्लेम करते हैं उनकी वजह से ये बोल कर हम अपने पावर को खत्म कर देते हैं। जब अपने पावर को यूज करना बंद कर देंगे तो उस दिन से अपनी ताकत कम होकर खत्म होती जाएगी।

नाराजगी भी एक मन से रोना है : किसी ने कभी आपको हर्ट किया? उनको लेकर आइए और अपने लेफ्ट हैंड पर बिठाइए क्योंकि वे मुक्ति मांग रहे हैं। बहुत टाइम हो गया, यहां देखो उन्होंने क्या किया? कितने पावर थे उनके पास? क्या बोला क्या किया? क्या व्यवहार किया सामने किया, पीठ पीछे किया। बहुत पावर उतने ही पावर हैं। उन्होंने जब किया तो मैंने कैसे सोचा। इतना करो तो भी यही सुनने को मिलता है। मेरी तो कोई रिपेक्ट ही नहीं है, वैल्यु नहीं है। बस करते जाओ यहां के लिए शुक्राना तो कोई है नहीं। ये तो सिर्फ शिकायत करते रहते हैं ये मेरी थॉट्स थी। जब मैंने ये वाली थॉट्स क्रियेट की तो मेरे मन ने रोना शुरू कर दिया। किसी के तो आंखें भी रोना शुरू कर देती हैं।

जब मैंने ऐसा मन में रोना शुरू किया तब हमने ऐसा नहीं कहा मैंने ऐसी थॉट्स क्रियेट की तब रोयी। मैंने कहा आपने मुझे रूलाया और सारी पावर किसको दे दी। फिर उनके तरफ देखते हैं कि अब आप पहले सॉरी बोलो, तब हम ठीक होंगे। वो कहते हैं मैं क्यों सॉरी बोलूं मैंने तो ऐसा कुछ नहीं बोला। तो क्या हम तब तब रोते रहें। चाहें आंखों से रोऊं या मन से रोऊं। नाराजगी भी एक मन से रोना है। नाखुश होना ये भी एक रोना है। जितनी देर हम ऐसे रो रहे हैं, हम कह रहे हैं उनकी वजह से कहकर खुद को बड़ी चोट लगाते हैं। फिर कहते हैं ये वाली बात मुझे कभी नहीं भूलनी है। ये किलयरेटी लेकर आएं कि सही नहीं किया। लेकिन उनकी पावर उतनी ही थी जो उन्होंने किया। जो उन्होंने किया तो उनके कर्मों ने किसकी शक्ति घटाई? उनकी शक्ति घटाई। उनके कर्म ने उनकी शक्ति घटाई। उनके कर्म ने उनका भाग्य बनाया। उनको जो कर्म करता हुआ देखकर मैंने जो कर्म किया। मेरे कर्म ने मेरी शक्ति बढ़ाई। शक्ति बढ़ाना या घटाना हमारी च्वाइस थी। अपमानित होने के पीछे देह अभियान होता है। देह अभियान के कारण खुद की पहचान भूल जाते हैं। खुद को सम्मान और स्वमान में न रहने के कारण अपमानित महसूस होता है।

राजयोगी जीवन का आधार है पवित्रता: बीके सुधा दीदी

शिव आमंत्रण, साइबेरिया।

टूमेन में ब्रह्माकुमारी सेवाकेंद्र की स्थापना 2014 में हुई थी। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका सुधा दीदी के आगमन पर आध्यात्मिक का आयोजन किया गया। ब्राह्मणों के जीवन में पवित्रता की शक्ति विषय पर संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि सुख, शांति और आनंद के लिए जरूरी है कि हमारे जीवन में पवित्रता हो। पवित्रता ही सुख-शांति की जननी है। पवित्रता से ही जीवन में सुख-शांति आएगी। जीवन आनंदमय बनेगा। परमात्मा कहते हैं कि मेरे बच्चों एक जन्म पवित्र रहो तो तुम्हें 21 जन्म पवित्र दुनिया का मालिक बना दूंगा। राजयोगी जीवन का पवित्रता आधार है। इससे ही हम योग की गहराई में जा सकते हैं। परमात्म दुआ का पात्र बन सकते हैं।

भारत दिवस महोत्सव मनाया

शिव आमंत्रण, मास्को (रशिया) | 8वां भारत दिवस महोत्सव मास्को में आयोजित किया गया है। महोत्सव का आयोजन भारतीय सांस्कृतिक केंद्र एसआईटीए द्वारा किया गया है। महोत्सव रूसी संस्कृति मंत्रालय और मॉस्को सरकार के तत्वावधान में आयोजित किया जाता है। इसमें एसआईटीए के अध्यक्ष मनोज कोटवानी ने कहा एक विश्व और एक परिवार के लिए प्यार और करुणा जरूरी है। इस दिशा में हमारा छोटा सा योगदान है। दुनिया भर में मानवता की सेवा करते हुए, ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान मनुष्य को ऊंचा उठाने में मदद कर रहा है। इस दौरान चित्र प्रदर्शनी से राजयोग मेडिटेशन के बारे में बीके बहनों ने गाइड किया।

मास्को में दिया राजयोग का संदेश

शिव आमंत्रण, मास्को।

मास्को ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र की ओर से ब्रह्माकुमार भाई-बहनों के लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सभी को आत्म चेतना और ईश्वर चेतना का अभ्यास कराया गया। साथ ही सभी बीके सदस्यों ने अपने जीवन से जुड़े आध्यात्मिक अनुभवों को एक-दूसरे से सांझा किया। आध्यात्मिक उन्नति के लिए पाइंट बताए।

राजदूत की विदाई पर किया सम्मानित

शिव आमंत्रण, सिलिकॉन वैली, यूएसए।

यूएसए में भारत के राजदूत डॉ. टीवी नागेंद्र प्रसाद को ब्रह्माकुमारीज़ सिलिकॉन वैली परिवार की ओर से विदाई दी गई। इस मौके पर बीके कुसुम दीदी के नेतृत्व में बीके सदस्यों ने डॉ. प्रसाद से मिलकर उन्हें शुभकामनाएं। अब वह कजाकिस्तान में सेवाएं देंगे। इस दौरान बीके कुसुम दीदी ने डॉ. प्रसाद और उनकी पत्नी पद्मावती को सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान सामाजिक कल्याण के लिए बहुत ही सराहनीय कार्य कर रही है। वर्तमान में राजयोग मेडिटेशन की बहुत आवश्यकता है। राजयोग हमारे जीवन को ऊंचा उठाता है। संस्था सामाजिक कल्याण में जुटी है।

RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2021-23, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 August 2023
» स्वामीः राजयोगा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन » प्रकाशक, संपादक व मुद्रकः ब्र.कु. कोमल द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित » संयुक्त संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र